

Manuscript

प्रमुख विषयवस्तुएं

प्रेरितों के काम की पुस्तक

अध्याय 3

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्‍त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकार्इ के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

[परिचय 1](#_Toc80705573)

[पवित्र आत्मा 1](#_Toc80705574)

[पिन्तेकुस्त से पहले 2](#_Toc80705575)

[समय 2](#_Toc80705576)

[उद्देश्य 4](#_Toc80705577)

[पिन्तेकुस्त का दिन 5](#_Toc80705578)

[विशेषता 5](#_Toc80705579)

[अन्य भाषाएँ 6](#_Toc80705580)

[परिणाम 8](#_Toc80705581)

[पिन्तेकुस्त के बाद 10](#_Toc80705582)

[सामरिया 10](#_Toc80705583)

[कैसरिया 11](#_Toc80705584)

[इफिसुस 12](#_Toc80705585)

[प्रेरित 13](#_Toc80705586)

[अद्वितीय 13](#_Toc80705587)

[शर्तें 13](#_Toc80705588)

[नींव का समय 14](#_Toc80705589)

[अधिकारिक 15](#_Toc80705590)

[कार्य 15](#_Toc80705591)

[आशीष 17](#_Toc80705592)

[आश्चर्यकर्म 17](#_Toc80705593)

[प्रकाशन 18](#_Toc80705594)

[विविधतायें 18](#_Toc80705595)

[रणनीतियाँ 19](#_Toc80705596)

[ढाँचे 20](#_Toc80705597)

[कलीसिया 21](#_Toc80705598)

[आवश्यकता 22](#_Toc80705599)

[भौतिक सीमायें 22](#_Toc80705600)

[लौकिक सीमायें 22](#_Toc80705601)

[तैयारी 23](#_Toc80705602)

[शिक्षायें 23](#_Toc80705603)

[अधिकारीगण 24](#_Toc80705604)

[कठिनाइयाँ 26](#_Toc80705605)

[उपसंहार 27](#_Toc80705606)

परिचय

जो कोई भी उन माता पिता के आसपास रहा हो जिनके पास छोटे बच्चे हैं वह यह जानता है कि माता पिता को अक्सर अपने निर्देश कई बार दोहराने पड़ते हैं। माता पिता अपने बच्चों को एक ही विचार इसलिए दोहराते रहते हैं ताकि वे उन्हें परिपक्व और उपयोगी जीवन जीने के लिए तैयार करने में मदद दे सकें।

001

बिल्कुल इसी तरह से, जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो यह शीघ्र ही स्पष्ट हो जाता है कि लूका ने कुछ विषयों को कई बार सम्बोधित किया है। ये दोहराए गए अभिप्राय पूरी पुस्तक में चलते हैं और लूका के शिक्षण को समझने के लिए महत्वपूर्ण कुंजी हैं। इस लिए क्योंकि यह हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक के महत्व की समझ को प्राप्त करने की आशा देते हैं, इसलिए हमें इन दोहराए जाने वाले विषयों के ऊपर सावधानी से ध्यान देना चाहिए।

002

यह प्रेरितों के काम की पुस्तक की हमारी श्रृंखला का तीसरा अध्याय है, और हमने इस अध्याय का शीर्षक "प्रमुख विषय" रखा है। इस अध्याय में, हम तीन प्रमुख अवधारणाओं को देखेंगे जिन्हें लूका ने समय समय पर और बारी बारी सम्बोधित किया है जब वह बिना किसी बाधा के परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के फैलाव को आरम्भ की कलीसिया में खोल रहा था।

003

पहले के अध्याय में हमने लूका द्वारा प्रेरितों के काम की पुस्तक के उद्देश्य को यह कहते हुए सारांशित किया कि उसने सुसमाचार संदेश के गतिशील प्रभाव के बारे में एक ऐतिहासिक लेख को लिखा। जैसा कि हमने पहले देखा है कि, लूका ने पवित्र आत्मा के माध्यम से मसीह के निरन्तर चलते रहने वाले काम की विश्वसनीय गवाही के रूप में इतिहास के तथ्यों का वर्णन किया है। इस अध्याय में इस उद्देश्य को और ज्यादा गहराई से लूका के कुछ प्रमुख विषयों को देखते हुए हम करेंगे जिनका प्रयोग लूका ने इस मुख्य विचार के वर्णन और समर्थन के लिए किया है।

004

हम तीन प्रमुख विषयों के बारे में पता लगाएंगे जिन्हें प्ररितों के काम की पुस्तक को खुलते हुए ही परिचित कराया गया है और इसके सभी अध्यायों में इनका विकास किया गया है। पहला, हम पवित्र आत्मा के विषय के ऊपर देखेंगे, जिसने मसीह के राज्य के विस्तार के लिए कलीसिया को सशक्त किया। दूसरा, हम प्रेरितों पर ध्यान देंगे, ऐसे लोग जिन्हें मसीह की गवाही देने के लिए और नेतृत्व करने के लिए और मसीह की कलीसिया की सेवा करने के लिए अधिकृत किया गया था। और तीसरा, हम कलीसिया के विषय पर विचार करेंगे जिसे प्रेरितों ने यह सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किया था कि सुसमाचार और राज्य पूरे इतिहास में फैलता रहे। आइए सबसे पहले प्रेरितों के काम की पुस्तक में पवित्र आत्मा और उसकी भूमिका की ओर ध्यान दें।

005

पवित्र आत्मा

प्रेरितों के काम की पुस्तक पवित्र आत्मा के ऊपर गहरे धर्मविज्ञान को प्रस्तुत करती है। यह उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित करती है जो कि कलीसिया को परिवर्तित जीवन यापन करने और संसार में सुसमाचार प्रचार करने के लिए सशक्त करता है। यह वर्णित करती है कि उसने प्रेरितों और आरम्भ की कलीसिया के अन्य अगुवों की सेवकाई को मान्यता देने के लिए कई चिन्ह और आश्चर्यकर्म का प्रदर्शन किया। यह गवाही देती है कि उसने मसीहियों को उत्साह से भर दिया जो कि विरोध और सताव का सामना कर रहे थे। संक्षेप में, प्रेरितों के काम की पुस्तक यह विवरण देती है कि पवित्र आत्मा वह है जो कि सुसमाचार और राज्य के फैलाव के लिए योग्य बनाने की सामर्थ्य देता है, और लोगों को धर्मी जीवन यापन करने के लिए सशक्त करता है।

006

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में विभिन्न तरीकों से कार्य किया, हम अपने ध्यान को कलीसिया पर उसके प्रभाव को तीन अवस्थाओं में देखने के द्वारा केन्द्रित करेंगे। सबसे पहले, हम पवित्र आत्मा को पिन्तेकुस्त के दिन से पहले देखेंगे। दूसरा, हम पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में आत्मा के उण्डेले जाने की जाँच करेंगे। और तीसरा, हम पिन्तेकुस्त के बाद आत्मा के कार्य की खोजबीन करेंगे। आइए सबसे पहले हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को देखें जो कि आत्मा को पिन्तेकुस्त से पहले का विवरण देती है।

007

पिन्तेकुस्त से पहले

प्रेरितों के काम 1:3-11 में, लूका ने यह वर्णन किया है कि यीशु ने उसके पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के मध्य चालीस दिनों का समय, प्रेरितों को शिक्षा देने में व्यतीत किया। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 1:3 में पढ़ते हैं:

008

[यीशु] ने अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा (प्रेरितों के काम 1:3)।

009

जैसा कि हम देखेंगे कि, यीशु की राज्य के बारे में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण तत्व यह था कि पवित्र आत्मा एक विशेष तरीके से प्रेरितों के ऊपर शीघ्र आ जाएगा।

010

पिन्तेकुस्त से पहले पवित्र आत्मा के बारे में हम यीशु की शिक्षाओं के दो पहलुओं को छुएंगे। पहला, हम पवित्र आत्मा के आगमन के समय को देखेंगे। और दूसरा, हम उसके आगमन के उद्देश्य के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। आइए सबसे पहले यीशु की पवित्र आत्मा के आगमन के बारे में दी गई शिक्षा के ऊपर ध्यान दें।

011

समय

प्रेरितों के काम 1:4-8 में दिए गए यीशु के शब्दों को सुने:

012

और उन से मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो... परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे। [प्रेरितों] ने इकट्ठे होकर उस से पूछा, "कि हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्त्राएल को राज्य फेर देगाॽ" उस ने उन से कहा: "उन समयों या कालों को जानना, जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरितों के काम 1:4-8)।

013

ध्यान दें कि जब यीशु ने आत्मा के आने वाले बपतिस्मे की घोषणा की, तो प्रेरितों ने यह पूछा कि क्या यीशु इस्राएल के राज्य को पुन: स्थापित करने वाला था। इस्राएल के राज्य की स्थापना की अभिव्यक्ति से कई आधुनिक पाठक अपरिचित हैं इस लिए हमें इसे समझाने के लिए थोड़ा रूकना चाहिए।

014

पुराने नियम के भविष्द्वक्ताओं ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि क्योंकि इस्राएल और यहूदा के पाप इतने ज्यादा थे, जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर उन्हें प्रतिज्ञा की हुई भूमि से निर्वासित कर देगा और उन्हें विदेशी शासकों के अत्याचार के अधीन कर देगा। पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों के ऊपर आधारित हो कर यहूदियों ने यह विश्वास किया कि परमेश्वर बाद में उनके पापों को क्षमा करते हुए मसीह को उसके लोगों को पुन: स्थापित करने के लिए, उन्हें वापस उनकी भूमि पर ले जाने के लिए और उनके ऊपर राज्य करने के लिए भेजेगा। दाऊद का वंश होने के नाते, मसीह इस्राएल और यहूदा के ऊपर राजा बन कर आएगा और इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को प्रतिज्ञा की हुई भूमि में केन्द्रित करते हुए परिवर्तित कर देगा, जहाँ पर लोग अनन्त काल और आशीषित जीवन का आनन्द मनाएंगे। पहली शताब्दी तक, इस्राएल ने सैकड़ों वर्षों तक न्याय का सामना किया और बड़ी लालसा से इस्राएल के राज्य की पुनः स्थापना के लिए एक राजनीतिक मसीह के लिए आने की प्रतीक्षा किया। इस लिए, जब प्रेरितों ने यह सुना कि यीशु स्वर्ग में रोहित होने वाला था तो उन्होंने यह आशा की कि वह पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को जाने से पहले पूरा करेगा। इस लिए ही उन्होंने उससे इस्राएल की पुन: स्थापना के बारे में पूछा। परन्तु फिर भी, यीशु ने यह शिक्षा दी कि अचानक से होने वाली इस्राएल की राजनीतिक पुन: स्थापना की प्रसिद्ध प्रतीक्षा गुमराह करने वाली थी और पुराने नियम की भविष्यद्वाणी का पूरा किया जाना पूरे संसार में सुसमाचार के फैलाव और मसीह के महिमा में भरे हुए पुन: आगमन के द्वारा होगा।

015

परन्तु फिर क्यों प्रेरितों ने यीशु के द्वारा पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के प्रति कहे गए वाक्य के प्रतिउत्तर में राज्य की पुन: स्थापना के बारे में पूछाॽ ठीक है, एक बार फिर से, प्रेरित पुराने नियम की भविष्यवाणी के बारे में सोच रहे थे। पुराने नियम के कई संर्दभों में, यह भविष्यद्वाणी की गई है कि जब न्याय पूरा हो जाएगा, तो परमेश्वर अपने आत्मा को इस रीति से उण्डेलेगा जैसा कि पहले कभी नहीं उंडेला गया है।

016

सुनिए भविष्यद्वक्ता यशायाह ने यशायाह 44:3-4 में आत्मा के बारे में क्या कहा है:

017

क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएँ बहाऊँगा मैं तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूँगा। वे मजनुओं की नाई बढ़ेंगे जो धाराओं के पास घास के बीच में होते हैं (यशायाह 44:3-4)।

018

यहाँ पर यशायाह ने पुन:स्थापना की बात, यह कहते हुए कही है कि परमेश्वर उसके आत्मा को भूमि के ऊपर उण्डेलेगा।

019

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने यह घोषणा कि थी कि मसीह के आगमन से पहले, इस्राएल जिसे शास्त्रीओं ने पाप, भ्रष्टाचार और मौत का युग कहा है, में जीवन यापन करेगा। और उन्होंने यह घोषणा की कि जब मसीह आएगा तो वह एक नए युग का सूत्रपात करेगा, जिसे शास्त्रियों ने आने वाला युग कहा, ऐसा युग जिसमें परमेश्वर के शत्रुओं का न्याय होगा, और उसके लोग अन्ततः और अपरिवर्तनीय तरीके से धन्य ठहरेंगे। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने कभी भी निश्चित नहीं बताया कि यह प्रक्रिया कितना समय लेगी, परन्तु ज्यादातर शास्त्रियों ने यह आशा की कि यह अचानक से हो जाएगी।

020

इस दृष्टिकोण के विपरीत, यीशु ने यह समझाया कि परमेश्वर का राज्य राष्ट्रों में फैलते हुए समय के साथ प्रकट होता है। अचानक से आने की बजाय परमेश्वर का महिमा से भरा हुआ राज्य विभिन्न अवस्थाओं में पारगमन करेगा। आने वाला युग यीशु की पार्थिव सेवकाई के मध्य उदघाटित किया जाएगा।यह मसीह के स्वर्ग में राज्य के दौरान निरन्तर चलता रहेगा, जैसा कि राज्य सुसमाचार की सेवकाई के द्वारा विस्तार करता रहेगा। और जब यीशु भविष्य में पुनः वापस आएगा, तो पाप के युग का पूरी तरह से अन्त हो जाएगा और विश्वव्यापी रूप से, मसीह का राज्य इसकी पूर्णता को प्राप्त करेगा।

021

आने वाले राज्य के प्रति यह दृष्टिकोण व्याख्या करता है कि क्यों यीशु ने प्रेरितों के पूछे गए प्रश्न का प्रतिउत्तर इस तरीके से दिया। पवित्र आत्मा कलीसिया पर उण्डेल दिया जाने पर था, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी बातों की समाप्ति निकट थी। यीशु ने केवल राज्य का उदघाटन मात्र किया था और आत्मा की आशीष उसकी कलीसिया को सुसज्जित करती जो कि इस पाप से भरे हुए संसार में उसके पुन: आगमन तक जीवन यापन करती।

022

पवित्र आत्मा के आगमन के समय को ध्यान में रखते हुए, हम अब इसके आगमन के उद्देश्य को देखने के लिए मुड़ेंगे।

023

उद्देश्य

एक बार फिर से यीशु के प्रेरितों को प्रेरितों के काम 1:8 में कहे हुए शब्दों को सुनिए:

024

परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरितों के काम 1:8)।

025

इन शब्दों में, यीशु ने प्रेरितों को आत्मा के बपतिस्मा के बारे में नए तरीके से सोचने के लिए पुनः निर्देशित किया। राज्य की अन्तिम अवस्था की आशा देने की तुलना में, आत्मा को उण्डेला जाने वाला था ताकि वह प्रेरितों को मसीह के लिए धर्मी और विश्वासयोग्य गवाह होने के लिए सशक्त करे। जो कुछ यीशु ने कहा उस पर ध्यान केन्द्रित करते हुए आत्मा की सेवकाई के दो आयामों को खोल दें: सामर्थ्य और धार्मिकता भरी हुई गवाही।

026

सबसे पहले, यीशु ने उसके शिष्यों को कहा कि वे आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा सामर्थ्य को प्राप्त करेंगे। आत्मा का सामर्थ्य के साथ होना पुराने नियम में एक सामान्य बात है, जिसे अक्सर "परमेश्वर के आत्मा" में अभिव्यक्ति में प्रस्तुत किया गया है, जो कि इब्रानी वाक्य रूआख इलोहीम (~YHIÊL{A/ X:WR)) का अनुवाद है। यह इब्रानी अभिव्यक्ति परमेश्वर की ओर से आने वाली सामर्थ्यशाली हवा या ऊर्जा की शक्ति का संकेत देती है। पुराने नियम में, परमेश्वर का आत्मा विस्तृत रूप में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए संसार में सामर्थशाली तरीके से कार्य करता था।

027

पवित्र आत्मा की सामर्थ्य नाटकीय तरीकों से लोगों के जीवनों में प्रगट होती थी। उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर का आत्मा न्यायियों के अध्याय 14-15 में शिमशोन के ऊपर उतरा, तो शिमशोन ने आश्चर्यजनक संसारिक कारनामों को प्रगट किया जिसके कारण इस्राएल ने पलिश्तियों के ऊपर महान् विजय को प्राप्त किया।

028

आत्मा की सामर्थ्य के अतिरिक्त, यीशु ने यह भी उल्लेख किया है कि आत्मा उसके शिष्यों को धार्मिकता भरी हुई गवाही देने के योग्य बनाएगा। यह संगठन भी पुराने नियम में दिखाई देता है। कई अवसरों पर, परमेश्वर के आत्मा ने उसके लोगों को साहसपूर्वक और प्रभावी ढँग से परमेश्वर के बदले में बोलने की सामर्थ्य दी। उदाहरण के लिए, मीका 3:8 के शब्दों को सुनिए:

029

परन्तु मैं तो यहोवा की आत्मा से शक्ति, न्याय और पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूँ (मीका 3:8)।

030

इस संदर्भ में, मीका ने समझाया है कि आत्मा ने उसे सच्चाई बोलने के लिए योग्य किया है यद्यपि उसका झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने विरोध किया था।

031

इसलिए, जब यीशु ने उसके प्रेरितों को कहा कि वह उन्हें पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा देकर उसके गवाह होने के लिए सामर्थ्य देगा, तो उसने यह संकेत दिया कि आत्मा उनमें कार्य वैसे ही करेगा जैसा कि पुराने नियम में अन्यों के द्वारा कार्य किया था। पवित्र आत्मा प्रेरितों के सन्देश की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए उनमें सामर्थ्य के कार्यों को भी प्रगट करेगा, और वे जो उनका विरोध करते हैं उन्हें बोलने के लिए शब्द देगा। और इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि आत्मा के यह प्रगटीकरण प्रेरितों के काम की पुस्तक में बार बार प्रकट हुए हैं।

032

अब क्योंकि हमने उन कुछ तरीकों को देख लिया है जिनमें लूका ने पवित्र आत्मा को पिन्तेकुस्त के दिन से पहले परिचित किया, हमें अब पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के उण्डेले जाने की ओर मुड़ना चाहिए जब कलीसिया यरूशलेम में एकत्र थी।

033

पिन्तेकुस्त का दिन

प्रेरितों का काम 2:1-4 पवित्र आत्मा के कलीसिया के ऊपर उण्डेले जाने के वर्णन के बारे में बतलाता है:

034

जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे (प्रेरितों का काम 2:1-4)।

035

इस घटना की महत्वपूर्णता की खोज करने के लिए, हम तीन मुख्य विषयों को स्पर्श करेंगे। सबसे पहला, हम पिन्तेकुस्त की विशेषता को देखेंगे। दूसरा, हम अन्यभाषा में बोलने की घटना पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम इन घटनाओं के परिणामों को देखेंगे। आइए हम सबसे पहले पिन्तेकुस्त की विशेषता पर ध्यान दें।

036

विशेषता

पिन्तेकुस्त का समय इस्राएल के पवित्र पंचांग में फसह के साथ निकटता से जुड़ा उत्सव का समय था। निर्गमन 12 और लेवीय अध्याय 23 के अनुसार, फसह का समय ऐसा समय था जब इस्राएली उनके मिस्र में से छुटकारे को स्मरण करते थे। यह मिस्र के ऊपर आई अन्तिम विपत्ति की रात के स्मरण में मनाया जाता था, जब परमेश्वर ने मिस्रियों के पहिलौठों को मार दिया था परन्तु विश्वासयोग्य इस्राएलियों के घरों के ऊपर से निकल गया था। फसह का त्यौहार यह स्मरण दिलाता था कि यहूदियों को कैसे परमेश्वर ने मिस्र के दासत्व से मुक्त कर दिया था।

037

पिन्तेकुस्त फसह के 50 दिनों के बाद, आरम्भ की फसल कटाई समय मनाया जाता था। यह मूल रूप से परमेश्वर के द्वारा प्रतिज्ञा किए हुए देश में अन्न के प्रावधान के लिए मनाया जाता था। इस समय, इस्राएली उनकी फसलों में से पहले फल को भेंट के रूप में परमेश्वर के पास धन्यवाद के रूप में उनकी सारी फसल में से ले आते थे जिसको वे उस वर्ष काटने की आशा करते थे।

038

इसके अतिरिक्त, नए नियम के समय में, यहूदी पिन्तेकुस्त के उत्सव को मूसा को परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था के लिए भी स्मरण करते थे। पवित्र आत्मा का इस समय उण्डेला जाना इस लिए भी महत्वपूर्ण था क्योंकि यह उन्हें भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह द्वारा घोषित की गई आशा का भी स्मरण दिलाता था।

039

सुनिए यिर्मयाह 31:31-33 में भविष्यद्वक्ता ने क्या लिखा है:

040

फिर यहोवा की यह वाणी है, "सुन ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूँगा... मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा और वे मेरी प्रजा ठहरेगें" (यिर्मयाह 31:31-33)।

041

व्यवस्था का हृदयों पर लिखा जाना परमेश्वर की आत्मा का कार्य है जिसकी प्रतिज्ञा पुराने नियम में की गई है और जो कि नए नियम में पूरी हुई।

042

पुराने नियम की इस पृष्टभूमि को ध्यान में रखते हुए, प्रेरितों के काम अध्याय 2 में पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा का उण्डेला जाना मसीही कलीसिया के लिए विशेष महत्व रखता है। यीशु का कूस्र पर बलिदान फसह के त्यौहार के बीच में हुआ। वह फसह का अन्तिम मेम्ना बन कर, परमेश्वर के लोगों के लिए पाप और मृत्यु की दासता से अनन्त छुटकारे को सुरक्षित करने लिए बलिदान हुआ।

043

जैसा कि पौलुस 1 कुरिन्थियों 5:7 में कहता है कि:

044

क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है (1 कुरिन्थियो 5:7)।

045

उपरोक्त संदर्भ के प्रकाश में, यह आश्चर्य करने वाली बात नहीं है कि आत्मा का उण्डेला जाना पिन्तेकुस्त के दिन हुआ। जबकि पिन्तेकुस्त ने फसल की महानता की ओर ध्यान आकर्षित किया, आत्मा का आगमन अनन्त मोक्ष की फसल का पहला फल था। आरम्भ के मसीहियों पर आत्मा का आगमन यह संकेत देता है कि कलीसिया ने भी परमेश्वर की व्यवस्था को उनके हृदयों पर लिखे जाने को प्राप्त कर लिया था, जिसने कलीसिया को साहसपूर्वक गवाही देने के लिए सुसज्जित कर दिया था। जैसा कि पौलुस रोमियों 8:23 में लिखता है कि, मसीही विश्वासियों के पास

046

... आत्मा का पहला फल हैं (रोमियों 8:23)।

047

जब लूका ने आत्मा के उण्डेले जाने के बार अपने वर्णन को लिखा है, तो उसने इसे पिन्तेकुस्त के साथ सम्बद्ध किए जाने पर जोर देते हुए इसके अत्याधिक महत्वपूर्ण होने का संकेत दिया है कि क्या हुआ था। यह कोई सामान्य घटना नहीं थी; यह कई आश्चर्यकर्मों में से एक नहीं था। पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के वरदान ने मुक्ति की बड़ी फसल की कटाई और परमेश्वर के लोगों में आन्तरिक नवीनीकरण को आरम्भ कर दिया ताकि वे मसीह के राज्य को स्थापित करें।

048

अब क्योंकि हम पिन्तेकुस्त के समय की कुछ महत्वपूर्णता को आत्मा के उण्डेले जाने के द्वारा समझते हैं, इस लिए अब हमें अन्यभाषाओं की घटना की ओर मुड़ना चाहिए जो कि पवित्र आत्मा की उपस्थिति का प्रकटीकरण है।

049

अन्य भाषाएँ

प्रेरितों के काम की पुस्तक अध्याय 2 में, लूका ने वर्णन किया है कि जब परमेश्वर का आत्मा पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया में उण्डेला गया था, तो प्रेरितों और अन्य विश्वासियों ने अन्य भाषा में बोला। दुर्भाग्य से, कलीसिया में अन्यभाषा के वरदान को लेकर बहुत ज्यादा भ्रम की स्थिति है। इस लिए हमें दो प्रश्नों पर चिंतन करने के लिए एक क्षण रूकना चाहिए। सबसे पहले, अन्यभाषा का वरदान क्या थाॽ और दूसरा, क्यों परमेश्वर ने इस वरदान को दियाॽ

050

आधुनिक कलीसिया में, विभिन्न मसीही विश्वासी अन्यभाषा के वरदान को विभिन्न तरीकों से समझते हैं। कुछ यह बहस करते हैं कि अन्यभाषा सुनने की बजाए बोलने का आश्चर्यकर्म था। इस दृष्टिकोण में, प्रेरितों ने उन्मादपूर्ण वाक्यों को बोला, जिन्हें आत्मा ने श्रोताओं को उनकी अपनी भाषा में समझने के लिए सक्षम किया।

051

परन्तु लूका के कम से कम दो विवरण इसे बहुत ही ज्यादा एक जैसा बना देते हैं कि आश्चर्यकर्म जो हुआ वह बोलने का हुआ, ऐसा जिसमें आरम्भ के विश्वासियों ने वास्तविक मानव भाषा में बात की थी जिसे कि उन्होंने कभी भी नहीं सीखा था। और सबसे ज्यादा लूका ने विशेष तौर पर लिखा है कि पवित्र आत्मा ने अन्य भाषा में बात करने के लिए वक्ताओं को सक्षम किया। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 2:4 में पढ़ते हैं:

052

और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे (प्रेरितों के काम 2:4)।

053

लूका ने इस बात का उल्लेख बिल्कुल भी नहीं किया है कि पवित्र आत्मा श्रोताओं को आश्चर्यजनक तरीके से सुनने के लिए योग्य कर रहा था। दूसरा, शब्द अन्यभाषा यूनानी भाषा की संज्ञा ग्लोसा का अनुवाद है। नए नियम में और अन्य यूनानी साहित्य में, यह शब्द अक्सर सामान्य मानवीय भाषाओं की ओर संकेत करता है। और यहाँ पर शक करने के लिए ऐसा कोई ठोस कारण नहीं है जो इसके संदर्भ से अलग ही कुछ अर्थ दे। इसलिए हम यह भरोसा कर सकते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन अन्यभाषा का आश्चर्यकर्म अशिक्षित मानव भाषाओं में बात करने के लिए एक अलौकिक क्षमता थी।

054

परन्तु क्यों पवित्र आत्मा ने उसकी उपस्थिति को इस तरह विशेष रूप में प्रकट कियाॽ उस दिन अन्यभाषा की क्या विशेषता थीॽ सुनिए पतरस के प्रेरितों के काम 2:16-21 में दी हुई व्याख्या को:

055

परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है: "कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। बरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उण्डेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे... प्रभु के महान और प्रसिद्ध दिन के आने से पहिले। और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा (प्रेरितों के काम 2:16-21)।

056

इस संदर्भ में, पतरस ने योएल 2:28-32 की ओर संकेत करके जो कुछ पिन्तेकुस्त के दिन वहाँ हो रहा था की व्याख्या की है, जिसमें अन्यभाषा का आश्चर्यकर्म भी सम्मिलित है।

057

दिलचस्प बात यह है कि, पतरस ने योएल के शब्दों को ठीक वैसा ही उद्धृत नहीं किया है जैसे यह लिखे हुए हैं। इब्रानी भाषा की बाइबल और सप्तिवगिंता (सेप्टोजेन्ट) में, योएल का लेख ऐसे आरम्भ होता है, "और बाद में " परमेश्वर ऐसे कहता है कि, मैं अपने आत्मा को सारे लोगों के ऊपर उण्डेलूँगा।" परन्तु पतरस ने योएल 2:28 का यह कहते हुए विस्तारवर्धक अनुवाद किया है कि, "अन्तिम दिनों में।" पतरस का योएल के शब्दों में परिवर्तन यह दिखलाता है कि उसने यह विश्वास किया है कि पिन्तेकुस्त के दिन की घटनायें बाद के दिनों, अर्थात् अन्तिम दिनों का हिस्सा थी।

058

अब, पतरस का विश्वास यह था कि आत्मा का उण्डेला जाना अन्तिम दिनों में हुआ जिसे उसने अन्य शब्दों साथ योएल से उद्धृत करते हुए समर्थन दिया है। जब पतरस ने योएल अध्याय 2 को उद्धृत किया तो उसका संकेत यह था कि आत्मा का आगमन प्रभु के महान और महिमा से भरे हुए दिन पहले प्रकट होगा।

059

सम्पूर्ण पुराने नियम में, प्रभु का दिन परमेश्वर के न्याय और आशीष का दिन है, और पुराने नियम में कई अवसरों पर, यह ऐसे दिन के लिए संकेत करता है जब परमेश्वर अन्त में और पूरी तरह से उसके शत्रुओं को नाश कर देगा और उसके विश्वासयोग्य लोगों को आशीषित करेगा।

060

इस लिए, जब पतरस ने प्रभु के महान और महिमा से भरे हुए दिन के प्रदर्शन को आत्मा के उण्डेले जाने के द्वारा व्याख्या दी, तो वह यह कह रहा था कि जो कुछ पिन्तेकुस्त के दिन घटित हो रहा था वे इतिहास के महान क्षण थे। पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा का आगमन अन्तिम दिनों का आश्चर्य था, यह महिमा से भरे हुए अलौलिक हस्तक्षेप का समय था जो कि परमेश्वर के राज्य के अन्तिम चरण को स्थापित कर रहा था।

061

दुर्भाग्य से, बहुत सारे विश्वासी आज आत्मा के इस उण्डेले जाने के भव्य महत्व को खो देते हैं। इसकी बजाए विश्वासियों में यह सोच लोकप्रिय है कि प्रेरितों के काम अध्याय 2 की घटनायें प्रत्येक विश्वासी की व्यक्तिगत् पवित्रता के लिए एक नमूने के रूप में हैं। हम यह अपेक्षा उत्पन्न करते हैं कि सभी सच्चे आत्मिक विश्वासी वैसे ही आत्मा के अनुभव को नाटकीय प्रगटीकरण के साथ प्राप्त करेंगे जैसे पिन्तेकुस्त के दिन हुआ और प्रेरितों के काम में कई अन्य अवसरों पर हुआ।

062

इसे इस तरह से सोचें। नया नियम हमें शिक्षा देता है कि परमेश्वर के राज्य के उदघाटन के समय परमेश्वर के कई बड़े और महान् अद्भुत कार्य प्रकट हुए। मसीह हमारे लिए क्रूस के ऊपर मर गया, मृतकों में जी उठा और स्वर्गारोहित हो कर पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हुआ। प्रत्येक बार जब भी एक व्यक्ति मसीह के पास विश्वास में आता है, तो इस घटना के गुण उस व्यक्ति के जीवन में लागू किए जाते हैं। परन्तु मसीह प्रत्येक बार जब भी कोई व्यक्ति उसमें नया जीवन प्राप्त करता है तो उसके लिए न ही मरता,न ही जी उठता और न ही स्वर्गारोहित होता है।

063

कुछ इस तरह से, नया नियम यह शिक्षा देता है कि पिन्तेकुस्त भी सभी समयों के-लिए-एक-बार की महान् घटना थी जिसे परमेश्वर अन्त के दिनों में लेकर आया है। बाद में हम इस अध्याय में यह देखेंगे कि यह अन्य अवसरों के लिए भी सत्य है जब आत्मा को प्रेरितों के काम में विशेष तरीकों से उण्डेला गया। क्योंकि उन आरम्भ के दिनों में, मसीही कलीसिया में, पवित्र आत्मा की उपस्थिति को कलीसिया के ऊपर लागू किया गया था, हमें उसकी आराधना के लिए सशक्त किया गया था। हमें सदैव यह अपेक्षा करनी चाहिए कि पवित्र आत्मा विश्वासियों के जीवनों में उपस्थित रहता है, परन्तु हमें अक्षरश: ऐसी अपेक्षा नहीं करनी चाहिए वह उसी तरह से प्रगट होता है जैसा कि हम उसे पिन्तेकुस्त के दिन देखते हैं। सच्चाई तो यह है, कि यहाँ तक कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में अन्य अवसरों पर भी विशेष रूप से आत्मा के उण्डेले जाने के समय, आत्मा के प्रकटीकरण अक्षरश: एक जैसे नहीं थे। पिन्तेकुस्त के दिन आग की सी दिखाई देती हुई जीभें और बड़ी आँधी की आवाज, और साथ ही भविष्यद्ववाणी का वरदान और अन्यभाषा, कोई सामान्य विश्वास के अनुभव नहीं थे। वे तो महान् आलौकिक हस्तक्षेप के परिणाम थे, जो कि परमेश्वर का कार्य था जिसके द्वारा उसने उसके राज्य का उदघाटन किया था।

064

अब क्योंकि हमने पिन्तेकुस्त की विशेषता को देख लिया है और अन्यभाषा के आश्चर्यकर्म को भी देखा है जो कि पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के साथ आया, इसलिए हमें अब उन घटनाओं के परिणामों की ओर मुड़ना चाहिए जो उस दिन प्रकट हुई।

065

परिणाम

जैसा कि आपको स्मरण होगा, हमने इस अध्याय में पहले ही देख लिया है कि यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा प्रेरितों को उसकी साहसपूर्वक गवाही देने के लिए सशक्त करने के लिए दिया गया था। इसलिए जब हम पिन्तेकुस्त के परिणामों की चर्चा करते हैं, तो हम इस तरीके के ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे जिसमें पवित्र आत्मा ने प्रेरितों करने को सामर्थ्य दी है और इस सामर्थ्य को राज्य के सुसमाचार के प्रसार के लिए प्रयोग किया। इस पर आरम्भ करने के लिए, आइए हम उस तरीके पर विचार करें जिसमें पवित्र आत्मा ने प्रेरित पतरस को सशक्त किया।

066

जब हम लूका के सुसमाचार का सर्वेक्षण करते हैं, तो हम पाते हैं कि पवित्र आत्मा के आगमन से पहले, पतरस सदैव स्पष्ट विचारों के साथ नहीं था। उसे रूपान्तरण के पहाड़ पर झिड़का गया था क्योंकि वह मूसा और एलिय्याह के लिए तम्बू निर्मित करना चाहता था। उसने प्रभु के पकड़े जाने वाली रात मसीह का तीन बार इन्कार किया। और यहाँ तक कि पतरस की प्रेरितों के काम की सेवकाई के मध्य, लूका ने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया है पतरस के पास उच्च शिक्षा नहीं थी और वह ऐसा व्यक्ति नहीं था जिससे यह अपेक्षा की जाती हो कि वह किसी को निरूत्तर कर देगा। सुनिए प्रेरितों के काम 4:13 में लूका के दिए हुए शब्दों:

067

जब उन्हों ने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उन को पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं (प्रेरितों के काम 4:13)।

068

पतरस के दिए गए इस चित्र के साथ, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य थी जिसने उसे परिवर्तित कर दिया था और पिन्तेकुस्त के दिन उसे एक गतिशील और सफल सुसमाचार प्रचार करने के लिए सक्षम किया था। पतरस ने उनका खंडन किया जिन्होंने यह दोष लगाया कि विश्वासी नशे में थे। उसने पुराने नियम के संदर्भ से टिप्पणी दी और उसे निरूत्तर कर देने वाले तरीके से यह प्रदर्शित करते हुए लागू किया कि यीशु ही भविष्यद्वाणी किया हुआ मसीह था। पवित्र आत्मा ने भी पतरस और अन्य प्रेरितों की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए उनकी घोषणा को गवाही देने लिए आश्चर्यकर्मों को प्रकट करने के लिए उन्हें सशक्त किया। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 2:43 में पढ़ते हैं:

069

और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे (प्रेरितों के काम 2:43)।

070

पवित्र आत्मा की पतरस और अन्य प्रेरितों को सुसमाचार की गवाही देने के लिए प्रदान की गई महान् सामर्थ्य के प्रकाश में, हमें इस बात के आश्चर्य में नहीं पड़ना चाहिए कि परमेश्वर ने प्रेरितों को गवाही देने के लिए आशीषित किया। सुनिए कैसे लूका उनकी गवाही को प्रेरितों के काम 2:41, 47 में वर्णित करता है:

071

सो जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्हों ने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए। और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था (प्रेरितों के काम 2:41, 47)।

072

पिन्तेकुस्त के दिन तीन हजार लोग प्रभु में मिल गए। और यह बाहरी, गुणात्मक वृद्धि आत्मा के सशक्त किए जाने के परिणामस्वरूप आई। परन्तु कलीसिया की वृद्धि केवल बाह्य रूप से ही नहीं हुई। आन्तरिक वृद्धि भी आत्मा के सशक्त किए जाने के परिणामस्परूप आई। सुनिए लूका के प्रेरितों के काम 2:42-47 के शब्दों को:

073

और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे ... और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे। और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे। और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था (प्रेरितों के काम 2:42-47)।

074

जब आरम्भ की कलीसिया के विश्वासियों ने प्रेरितों की शिक्षा के अनुसार जीवन यापन करना आरम्भ किया, परमेश्वर और अपने साथ के अन्य विश्वासियों के प्रति सेवा में अपने जीवनों को समर्पित कर दिया, तो कलीसिया आन्तरिक तौर पर वृद्धि करने लगी। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के परिणाम आरम्भ की कलीसिया के दिनों के लिए आश्चर्यजनक थे।

075

लूका की पिन्तेकुस्त के दिन से पहले और पिन्तेकुस्त के दिन के बाद पवित्र आत्मा के ऊपर चर्चा को देख लेने के बाद, हम अब उस तरीके को देखेंगे जिसमें पवित्र आत्मा ने पिन्तेकुस्त के बाद कार्य किया जब उसने सुसमाचार की सेवकाई के लिए निरन्तर सशक्तिकरण के कार्य को किया।

076

पिन्तेकुस्त के बाद

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका पिन्तेकुस्त के बाद पवित्र आत्मा के कई बार किए हुए नाटकीय कार्य की ओर मुड़ता है। उदाहरण के लिए, हम तीन संदर्भों के ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। हम सबसे पहले एक ऐसी घटना को देखेंगे जो की सामरिया शहर के गुमनाम स्थान पर घटित हुई। दूसरा, हम कैसरिया में घटित हुई एक घटना को देखेंगे। और तीसरा, हम इफिसुस में आत्मा के प्रगटीकरण के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। आइए सबसे पहले हम सामरिया में, यरूशलेम के ठीक उत्तर में, आत्मा की सेवकाई को देखें।

077

सामरिया

प्रेरितों के काम 8:14-17 में, लूका ने एक अन्य स्थान पर आत्मा को विशेष तरीके से विश्वासियों के ऊपर उतरते हुए लिखा है। सुनिए लूका ने वहाँ पर क्या लिखा है:

078

जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेजा। और उन्हों ने जाकर उन के लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएँ। क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर न उतरा था, उन्हों ने तो केवल प्रभु यीशु में नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्हों ने उन पर हाथ रखे और उन्हों ने पवित्र आत्मा पाया (प्रेरितों के काम 8:14-17)।

079

सामान्य तौर पर प्रेरितों के काम में (जैसा कि आज के दिनों में होता है), पवित्र आत्मा उन लोगों के ऊपर उण्डेला गया जो कि पहली बार विश्वास में आए थे, न कि बाद में किसी समय पर। इस सम्बन्ध मैं, दृश्य यहाँ पर पिन्तेकुस्त के सृदश है: विश्वासियों ने आत्मा को उनके मन परिवर्तन के बाद प्राप्त किया। यह एक विशेष समय था, आत्मा का नाटकीय तरीके से उण्डेला जाना था। सामरियों पर आत्मा इस रीति से क्यों उतराॽ

080

ठीक है, आत्मा के इस असामान्य तरीके से उण्डेले जाने की सबसे उत्तम व्याख्या यह है कि इसने बड़ी सँख्या में सामरियों का मसीही विश्वास में आने के बारे में सूचित किया। जैसा कि आपको स्मरण होगा कि, यीशु ने प्रेरितों को परमेश्वर का राज्य यरूशलेम से यहूदिया, फिर सामरिया और फिर पृथ्वी के अन्तिम छोर तक विस्तार करने के लिए अधिकृत किया था। यरूशलेम में यहूदिया पिन्तेकुस्त के दिन एक आरम्भिक बिन्दु था। परन्तु सामरियों की विरासत मिलावटी थी, अर्थात् वे यहूदी और अन्यजातियों से मिलकर बने थे, और उन्होंने परमेश्वर की आराधना पुराने नियम में दिए हुए निर्देशों के अनुसार नहीं किया। इस लिए, जब सामरिया में सुसमाचार पहुँचा, तो इसने एक नए चरण को, यीशु के द्वारा उसके शिष्यों को दिए हुए आदेश की पूर्णता की ओर मुख्य चरण का प्रतिनिधित्व किया। यह जातियों की जातीय सीमाओं के पार सुसमाचार का पहला बड़ा विस्तार किया जाना था। पवित्र आत्मा ने इन विश्वासियों को अन्य भाषा बोलने के लिए सशक्त किया था ताकि ये प्रेरितों को और बाकी की कलीसिया को यह गवाही दे सकें कि सामरियों को भी कलीसिया ने पूरी तरह अपना लिया गया है।

081

सामरिया में आत्मा की इस समझ को घ्यान में रखते हुए, हमें कैसरिया की ओर मुड़ना चाहिए, जहाँ पर पवित्र आत्मा एक बार फिर से इस तरह से उतरा जो कि हमें जो कुछ पिन्तेकुस्त के दिन घटित हुआ था, के बारे में स्मरण दिलाता है।

082

कैसरिया

सामरिया के अपरिचित शहर में हुई घटना के सदृश, कैसरिया की परिस्थिति ये संकेत देती है कि वहाँ पर भी पहली बार सुसमाचार जातियों की सीमाओं को तोड़ते हुए पहुँचा था। इस घटना में, अन्यजाति पहली बार मसीह में एक बड़ी सँख्या में आ मिले थे, विशेषकर रोमी सूबेदार कुरनेलियुस और उसका घराना।

083

प्रेरितों के काम 10:44-47 में यह वर्णित करता है कि उस समय क्या हुआ जब पतरस ने कुरनेलियुस के घराने को सुसमाचार प्रचार किया:

084

पतरस ये बातें कह ही रहा था... कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उण्डेला गया है। क्योंकि उन्हों ने उन्हें भाँति भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा... इन्होंने हमारी नाई पवित्र आत्मा पाया है? (प्रेरितों के काम 10:44-47)।

085

एक बार फिर से, एक आश्चर्य कर देने वाला सामान्तर पिन्तेकुस्त के दिन के लिए प्रमाणित होता है: वे जिन्होंने सुसमाचार में विश्वास किया था वे अन्य भाषा बोलने लगे। पतरस ने तो यहाँ तक टिप्पणी की कि कैसरिया के विश्वासियों ने भी पवित्र आत्मा को प्राप्त किया था जैसे कि हमने प्राप्त किया था, जो शायद पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के उण्डेले जाने का संकेत देता है।

086

पुराने नियम में, अन्यजाति परमेश्वर की इस्राएल के साथ बान्धी गई वाचाओं से बाहर थे। और विश्वासयोग्य यहूदी लगातार स्वयं को मन न फिराए हुए अन्यजातियों से दूर रखते थे। इसलिए, यह आरम्भ की कलीसिया के लिए अचम्भे की बात ठहरी जब अन्यजातियों ने मसीह में यहूदी धर्म में पूरी तरह मन परिवर्तित किए बिना मन परिवर्तन किया।

087

परिणामस्वरूप, पवित्र आत्मा कुरनेलियुस और उसके घराने के ऊपर आश्चर्यजनक तरीके से यह प्रदर्शित करते हुए उण्डेल दिया गया कि अन्यजातियों के राष्ट्रों के लिए भी अन्त में दरवाजों को खोल दिया गया है। सुनिए प्रेरितों के काम 11:4,15,18 के शब्दों को, जहाँ लूका ने अन्य जातियों के प्रति कलीसिया की प्रतिक्रिया के बारे में वर्णित किया है:

088

तब पतरस... ने उन्हें आरम्भ से क्रमानुसार कह सुनाया वह तुम से ऐसी बातें कहेगा... "जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था।" ... यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, "कि परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है।" (प्रेरितों के काम 11:4,15,18)।

089

अन्यजातियों का मसीह में आने का तरीका पिन्तेकुस्त से मिलता जुलता था, इस लिए पवित्र आत्मा ने यह प्रदर्शित किया कि उनका मन परिवर्तन वास्तविक था, और उसकी अन्यजातियों के साथ राज्य के निर्माण की योजना का आरम्भ हो गया था।

090

अब क्योंकि हमने सामरिया और कैसरिया में आत्मा के कार्य के ऊपर देख लिया है, हम अब इफिसुस में क्या हुआ को देखने के लिए तैयार हैं।

091

इफिसुस

यह घटना प्रेरितों के काम 19:1-6 में वर्णित की गई है, जहाँ पर हम निम्नलिखित विवरण को पढ़ते हैं:

092

पौलुस... ऊपर से सारे देश से होकर इफिसुस में आया। और कई चेलों को देखकर उन से कहा; "क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?" उन्हों ने उस से कहा, "हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।" उस ने उन से कहा; "तो फिर तुम ने किस का बपतिस्मा लिया?" उन्हों ने कहा; "यूहन्ना का बपतिस्मा।" पौलुस ने कहा; "यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।" यह सुनकर उन्हों ने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया। और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे (प्रेरितों के काम 19:1-6)।

093

एक बार फिर से, हम पिन्तेकुस्त के दिन जैसे सामान्तरों को यहाँ पाते हैं। यीशु में उनके बपतिस्मे के बाद, पवित्र आत्मा इन लोगों के ऊपर आ उतरा और वे अन्य भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।

094

इस संदर्भ में, लूका ने इफिसुस में पवित्र आत्मा को नाटकीय तरीके से उतरते हुए वर्णित किया है, जो कि एशिया माईनर का एक मुख्य शहर था, जो यहूदिया और सामरिया से बहुत दूर था। जैसा कि हमने देखा है कि, लूका ने पहिले ही आत्मा के कार्य को यरूशलेम, से सामरिया और अन्यजातियों में होते हुए देख लिया था। असामान्य तथ्य यह है कि आत्मा को प्राप्त करने वाले लोग यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शिष्य थे। अनुमानत: यह पश्चाताप किए हुए यहूदी थे जिन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गवाही को यूहन्ना के प्रकाशन से पहले प्राप्त किया था कि यीशु ही लम्बे-समय से प्रतीक्षा किया जाने वाला मसीह था।

095

लूका ने इस घटना पर प्रकाश इस लिए दिया है क्योंकि यह एक विषय को बन्द करता है जिसे लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक के आरम्भ में जोर देता है: यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु के बीच के सम्बन्ध के ऊपर। आपको प्रेरितों के काम 1:5 का स्मरण होगा, यीशु ने अपनी सेवकाई की तुलना यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ इस तरह से की है:

096

क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे (प्रेरितों के काम 1:5)।

097

इफिसुस में यूहन्ना के शिष्यों के ऊपर आत्मा के उण्डेले जाने की कहानी यह संकेत देती है कि अब यीशु का आत्मा को लाने का कार्य एक नई अवस्था में पहुँच चुका है। यहाँ तक कि यूहन्ना के शिष्य भी मसीह का अनुसरण करने वाले बन गए थे और उन्होंने मसीह की आत्मा को प्राप्त किया था। कोई भी चीज मसीह को प्राप्त करने के लिए पूरी नहीं है और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में जीवन यापन करना परमेश्वर की इच्छा अनुसार था।

098

लूका ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि जैसे जैसे प्रेरित कलीसिया के मिशन का विस्तार करते गए, उनका राज्य की सीमाओं पर किया गया कार्य लगातार पवित्र आत्मा के नाटकीय तौर पर उण्डेले जाने के द्वारा प्रमाणित किया गया। आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा, सुसमाचार का प्रसार निर्बाध गति से यरूशलेम से यहूदिया और फिर सामरिया, और फिर पृथ्वी के अन्तिम छोर तक हुआ। यहाँ तक कि आज के समय में भी, पवित्र आत्मा की सामर्थ्य ही केवल वह तरीका है जिसके द्वारा कलीसिया परिवर्तित हो सकती है और प्रभावशाली तरीके से सुसमाचार प्रचार कर सकती है। हमें भी आत्मा की सामर्थ्य पर निर्भर करने के लिए खोज करनी चाहिए यदि हम सुसमाचार के सन्देश के लिए प्रभावशाली और धर्मी गवाह होना चाहते हैं।

099

प्रेरित

पवित्र आत्मा की भूमिका को देख लेने के बाद, हम अब हमारे दूसरे विषय पर ध्यान देने के लिए तैयार हैं जो कि प्रेरित है। मसीह के स्वर्गारोहण होने से पहले, उसने उसकी सेवकाई को निरन्तर चलते रहने के लिए प्रेरितों के नियुक्त किया, जो कि उसके राज्य को यरूशलेम से सुसमाचार के द्वारा पृथ्वी के अन्तिम छोर तक पहुँचा दें। इस अध्याय में हमने पहले यह देखा कि प्रेरितों के काम 1:8 में यह वर्णन किया गया है कि पवित्र आत्मा ने आरम्भ की कलीसिया में विशेष भूमिका अदा की। सुनिए यीशु के उसके प्रेरितों को कहे गए शब्दों को:

100

परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरितों के काम 1:8)।

101

हमारे अध्याय के इस स्थान पर, हमें अपने ध्यान को दूसरे विषय की ओर केन्द्रित करना चाहते हैं जो कि इस आयत के ऊपर निर्भर करता है: प्रेरितों की भूमिका। जैसा कि यीशु ने यहाँ कहा है, कि पवित्र आत्मा प्रेरितों को इस लिए दिया गया ताकि वे पूरे संसार में उसके गवाह बन जाएँ।

102

आरम्भ की कलीसिया में, जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में सुसमाचार की गवाही दी वे "शहीद" या "गवाह" के रूप में जाने गए। ज्यादा प्रतिकूल परिस्थितियों में, गवाहों पर अत्याचार किए गए यहाँ तक कि मसीह के लिए गवाही देने के कारण उन्हें मार दिया गया। वास्तविक सच्चाई तो यह है कि कलीसिया की परम्परा हमें बताती है कि अधिकांश प्रेरितों का निधन इसी तरह से हुआ। सताव के आने पर भी मसीह के लिए गवाही देने का यह विषय लूका की चिंता का मुख्य विषय रहा है जब उसने आरम्भ की कलीसिया के बारे में लिखा। और इस सम्बम्ध में, कोई भी प्ररितों के जैसा मसीह के लिए साहसी, प्रभावी गवाह के रूप में नहीं था।

103

हम मसीह की गवाही देने के लिए प्रेरितों की भूमिका के तीन आयामों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। सबसे पहले, हम यह ध्यान देंगे कि उनकी गवाही अद्वितीय थी। दूसरा, हम यह देखेंगे कि यह आधिकारिक थी। और तीसरा, हम उनके गवाह के विभिन्न स्वभावों पर ध्यान देंगे, कि जिस तरह उन्होंने सुसमाचार के संदेश को प्रस्तुत करने के लिए अलग अलग तरीकों को प्रयोग किया। आइए हम प्रेरितों के पद के लिए उनकी अद्वितीय योग्यता के साथ आरम्भ करते हैं।

104

अद्वितीय

प्रेरित कम से कम दो कारणों से अद्वितीय थे। उनके पद की शर्तें किसी को भी एक प्रेरित बुलाने से रोकती थी, से आरम्भ करते हैं।

105

शर्तें

हम सभी जानते हैं कि यीशु के मूल रूप से बारहों में से एक प्रेरित अर्थात् यहूदा इस्करियोती ने हमारे प्रभु से विश्वासघात करके उसे क्रूस पर चढ़ाया था। बाद में, यहूदा ने अपने जीवन को समाप्त करते हुए, शेष ग्यारह प्रेरितों को अपने पीछे छोड़ दिया था। तब, यीशु के स्वर्ग में स्वर्गारोहण होने के बाद, ग्यारहों में सबसे पहली प्राथमिकता यहूदा के स्थान पर नए प्रेरित को चुनने की आई।

106

प्रेरितों के काम 1:21-26 में, पतरस नए प्ररिते के चुने जाने की शर्तों को इस तरह से विवरण देता है:

107

इसलिये जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता जाता रहा... जो लोग बराबर हमारे साथ रहे। उचित है कि उन में से एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए। तब उन्हों ने दो को खड़ा किया... और यह कहकर प्रार्थना की; "कि हे प्रभु ... यह प्रगट कर कि इन दोनों में से तू ने किस को चुना है। कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले... तब उन्हों ने उन के बारे में चिटि्ठयाँ डालीं, और चिट्ठी मत्तिय्याह के नाम पर निकली, सो वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया (प्रेरितों के काम 1:21-26)।

108

यह आयतें प्रेरितों के पद की शर्तों को स्थापित करती हैं, जो सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में प्रेरितों की सूची के लिए अद्वितीय थी। सबसे पहले, उन्हें परोक्ष में यीशु से शिक्षा प्राप्त किया हुआ होना चाहिए था। दूसरा, उन्हों ने यीशु को उसके जी उठने के बाद देखा हुआ हो। और तीसरा, उन्हें स्वयं परमेश्वर के द्वारा इस पद पर नियुक्त किया गया होना चाहिए। सभी ग्यारहों प्रेरितों ने इन सभी शर्तों को पूरा किया था क्योंकि उन्हें यीशु ने अपनी पार्थिव सेवकाई में शिक्षा दी थी, उन्होंने उसे जी उठने के बाद देखा था, और उन्हें स्वयं यीशु द्वारा नियुक्त किया गया था।

109

मत्तिय्याह ने इन सभी शर्तों को पूरा किया क्योंकि उसने भी यीशु से प्रभु की पार्थिव सेवकाई के दौरान शिक्षा पाई थी, उसने जी उठे हुए प्रभु को देखा था और वह परमेश्वर के द्वारा चिठ्ठी डाले जाने के द्वारा परोक्ष रूप से चुना गया था।

110

मत्तिय्याह के बाद, केवल एक और व्यक्ति को पवित्र शास्त्र में प्रेरित के पद पर नियुक्त किया गया था: पौलुस। पौलुस को यीशु के स्वर्गारोहण होने के बाद में एक प्रेरित के रूप में चुना गया था, इस लिए कलीसिया उसकी नियुक्ति के विषय में वास्तव में सन्देह रखती है। परन्तु पवित्रशास्त्र हमें यह शिक्षा देता है कि उसने यीशु से उसके जी उठने के बाद में उससे शिक्षा पाई और उसे देखा था, और यह कि उसे स्वयं यीशु ने नियुक्त किया था।

111

उदाहरण के लिए, पौलुस ने जी उठे हुए प्रभु को दमिश्क के मार्ग पर देखा था, जैसा कि लूका ने प्रेरितों के काम 9:3-6 में विवरण दिया है, उसे इस पद के लिए परमेश्वर स्वयं ने नियुक्त किया था, जैसा कि हम प्रेरितों के काम 9:15 और 22:12-16 में पढ़ते हैं। सच्चाई तो यह है, कि लूका ने पौलुस की नियुक्ति के बारे में तीन स्थानों पर प्रेरितों के काम अध्याय 9, 22, और 26 में लिखा है जो उसके इस दावे को सत्यापित करते हैं कि वह वास्तव में एक सच्चा प्रेरित है।

112

परन्तु पौलुस ने यह भी स्वीकार किया है कि उसकी योग्यतायें कुछ हद तक असामान्य थी, क्योंकि वह यीशु के स्वर्गारोहण के बाद तक विश्वास में नहीं आया था। पौलुस उसकी अद्वितीय और विशेष प्रेरिताई के बारे में 1 कुरिन्थियों 15:8-9 में उल्लेख करता है।

113

और सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूँ।
क्योंकि मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूँ (1 कुरिन्थियों 15:8-9)।

114

नींव का समय

इन अद्वितीय शर्तों को पूरा करने के अलावा, प्रेरित इस लिए भी विशेष थे क्योंकि उन्होंने कलीसिया के जीवन की नींव डालने के समय में सेवकाई का कार्य किया। इस विशेष समय में, उन्हें यीशु मसीह की कलीसिया की स्थापना के कार्य के लिए नियुक्त किया गया था। और क्योंकि उन्होंने अपने कार्य को किया, और क्योंकि कलीसिया उसकी नींव के ऊपर दृढ़ता से खड़ी हुई थी, इस लिए उनके विशेष कार्य के लिए फिर और ज्यादा आगे के लिए आवश्यकता नहीं रही।

115

लूका ने कई तरह से ध्यान दिया है कि प्रेरितों ने कलीसिया की सेवा नींव के रूप से की। जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा है, प्रेरितों ने जो प्राथमिक गवाह थे जो कि सुसमाचार को यरूशलेम से लेकर यहूदिया और फिर सामरिया, फिर पृथ्वी के अन्तिम छोर तक लेकर गए। उनके सुसमाचार के द्वारा, यहूदियों में से, सामरियों की भ्रष्ट आराधना में से, और अन्यजातियों की मूर्तिपूजा से पहले मसीही विश्वासियों को प्राप्त किया गया। उनके नेतृत्व के द्वारा, इतिहास में पहली कलीसियाओं की स्थापना हुई, और उनमें उस नमूने का विकास हुआ जिसका अनुसरण आने वाली कलीसिया करेगी। इस तरह और कई अन्य तरीकों से, प्रेरितों ने समय के विशेष बिन्दु में विशेष तरीके से कार्य किया। यह समय फिर दुबारा कभी नहीं आएंगे, और इस कार्य को फिर पुन: कभी नहीं पूरा किए जाने की आवश्यकता नहीं है।

116

इफिसियों 2:19-20 में, पौलुस ने प्रेरितों की विशेष मूलभूत भूमिका को इस तरह से सारांशित किया है:

117

और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो (इफिसियों 2:19-20)।

118

यीशु के अलावा, और कोई भी कोने के सिरे का पत्थर नहीं हो सकता है। और इसी तरह से, कोई और भी नेव नहीं हो सकती है, प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की और कोई भी सूची नहीं हो सकती है जो कि कलीसिया के लिए नेव का कार्य करे।

119

दुर्भाग्य से, हमारे दिनों में आज भी ऐसी कलीसियायें जो यह दावा करती हैं कि उनके पास अधिकारिक प्रेरित सेवकाई दे रहे हैं। तौभी, लूका ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि वास्तविक प्रेरित वे थे जो कि इस पद की शर्तों को पूरा करने की योग्यता रखते हैं, और उन्होंने विशेष तौर पर नींव डालने के समय में सेवा की जिसे कि पुन: कभी नहीं दुहराया जा सकता है। हमारे पास अभी भी प्रेरितों द्वारा रचित लेख नए नियम में मिलते हैं, परन्तु हमें इस तरह प्रेरितों को आज के समय कलीसिया में होने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

120

अधिकारिक

यह देख लेने के बाद कि प्रेरितों ने मसीह की गवाही को विशेष तरीके से दिया, हम अब उनकी गवाही के अधिकारिक स्वभाव को देखने जा रहे हैं। प्रेरितों के अधिकार को प्रेरितों के काम में कई तरह से देखा गया है, परन्तु सादगी को ध्यान में रखते हुए हम इनमें से केवल चार पर ही ध्यान देंगे। सबसे पहले, प्रेरितों का अधिकार उनके पद के कार्य में देखा जा सकता है। दूसरा, यह उनकी सेवकाई में परमेश्वर की आशीषों में देखा जा सकता है। तीसरा, यह उनके द्वारा आश्चर्यकर्म प्रगट करने की सामर्थ्य में प्रमाणित होता है। और चौथा, यह उस प्रकाशन में निरन्तर दिखाई देता है जो कि उन्होंने प्राप्त किया। आइए सबसे पहले हम उनके पद में उनके अधिकार के प्रदर्शन के कार्य को देखें।

121

कार्य

शब्द "प्रेरित" या अप्पोसटोलोस यूनानी भाषा में, मूलरुप से भेजे जाने का अर्थ रखता है। यह सामान्य तौर पर सन्देशवाहकों के लिए संकेत करता है, मध्यस्थ के लिए जो किसी मिशन को पूरा करने के लिए भेजा जाता है, और किसी एक राजदूत के लिए जो किसी अपने भेजने वाले के बदले में बोलने के लिए अधिकृत किया गया है। उदाहरण के लिए, जब यीशु ने बहत्तर मिशनरियों को परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करने के लिए लूका अध्याय 10 में भेजा, तो वे अस्थाई राजदूत थे, जिन्हें कुछ समय के लिए मसीह के अधिकार के हिस्से को प्रयोग करने के लिए नियुक्त किया था।

122

लूका 10:16 में, यीशु ने इन शब्दों के साथ मिशनरियों को अधिकृत किया:

123

जो तुम्हारी सुनता है वह मेरी सुनता है, और जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है, और जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजने वाले को तुच्छ जानता है (लूका 10:16)।

124

यहाँ हम देखते हैं कि मिशनरियों को मसीह के प्रतिनिधि के रूप में देखा जा रहा है। वे जो इन मिशनरियों को स्वीकार करते हैं वे मसीह की सेवा करने वाले गिने जाते हैं, और वे जो मसीह को स्वीकार करते हैं उन्हें ऐसे गिना जाता है कि उन्होंने जिसने उन्हें भेजा है उसे स्वीकार किया है, अर्थात्, पिता को।

125

इससे आगे, उस चर्चा का सुनिए जो कि उन लोगों के बीच में हुई जब मिशनरी लूका 10:17-19 में वापस आए:

126

वे बहत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, "हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में है। उस ने उन से कहा, मैं शैतान को बिजली की नाई स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। देखो मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है, और किसी वस्तु से तुम्हें हानि न होगी" (लूका 10:17-19)।

127

जब उसने उन्हें उसके मिशनरी होने के लिए नियुक्त किया, तो यीशु ने अपने हिस्से के अधिकार में कुछ को उन बहत्तरों को दे दिया। इस तरह, उनका प्रस्तुतिकरण केवल मात्र प्रतीकात्मक नहीं था। इसकी बजाए, वे उसके अधिकृत मध्यस्थ थे। वे अचूक शिक्षक नहीं थे, परन्तु उनके पास वह अधिकार था जिसके द्वारा वे दुष्टात्मा को निकाल और राज्य के आगमन की घोषणा कर सकते थे।

128

इसी तरह से, प्रेरित अधिकारिक राजदूत थे। परन्तु मसीह के लिए उनका प्रतिनिधित्व प्रेरितों के काम की पुस्तक में अन्य शिष्यों से दो महत्वपूर्ण तरीके से भिन्न होता है। सबसे पहले, लूका की कहानियाँ यह स्पष्ट कर देती हैं कि प्रेरितों को न केवल सुसमाचार के विस्तार के मिशन के लिए नियुक्त किया गया था, बल्कि इसी के साथ वे कलीसिया में इस पद के ऊपर सदैव के लिए नियुक्त किए गए थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों को अन्य लोगों या पदों के द्वारा निकाल नहीं दिया गया था। उन्होंने मसीह द्वारा प्रत्यायोजित अधिकार को अचूकता से, सीमित समय में पूरा किया। दूसरा, प्रेरितों को मसीह की कलीसिया की स्थापना और प्रशासन से सम्बन्धित सभी विषयों में बात करने के लिए अधिकृत किया गया था। प्रेरितों के काम अध्याय 15 यरूशलेम की महासभा यह संकेत देती है कि, प्रेरितों के शब्द बड़े पैमाने पर कलीसिया में स्वीकार किए जाते थे। जैसा भी निर्णय उन्होंने दिया उसे परमेश्वर की इच्छा मान कर स्वीकार किया गया था। 2 पतरस 3:2 जिस तरह से इसे प्रेरिताई का अधिकार कह कर वर्णित करता है उसे सुनिए:

129

उन बातों को... उद्धारकर्ता की उस आज्ञा को स्मरण करो, जो तुम्हारे प्रेरितों के द्वारा दी गई थी (2 पतरस 3:2)।

130

जैसा कि पतरस ने यहाँ पर उल्लेख किया है, प्रेरितों के शब्दों को स्वीकार किया जाना था क्योंकि उन्होंने यीशु की इच्छा और शिक्षा के प्रति विश्वासयोग्य भण्डारी के तौर पर सेवा की।

131

प्रेरितों के कार्य का विवरण दे लेने के बाद, अब हमें उस तरीके की ओर मुड़ना चाहिए जिसमें परमेश्वर ने उनकी विशेष और अद्वितीय सेवकाई को सुसमाचार के विस्तार के लिए आशीषित किया।

132

आशीष

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, परमेश्वर ने प्रेरितों को प्रत्येक बार जब भी उन्होंने सुसमाचार प्रचार किया तब लोगों को प्रभु में मिलाने के द्वारा आशीषित किया। जैसा कि हमने देखा है कि, पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के सन्देश ने कलीसिया में 120 लोगों की सँख्या को बढ़ा कर लगभग 3,000 लोग कर दिया। और इस तरह की आशीष लगातार प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलती है।

133

एक लेखक होने के नाते, लूका उसके पाठकों को यह शिक्षा देने में सावधान था कि कलीसिया में यह बाह्य, गुणात्मक वृद्धि परमेश्वर की स्वीकृति और सामर्थ्य का प्रमाण थी। एक तरह जिसे उसने इसे प्रमाणित किया वह आदरणीय फरीसी गमलीएल के शब्दों को उद्धृत करना था।

134

प्रेरितों के काम 5:38-39 में, गमलीएल ने इन शब्दों को प्रेरितों के बारे में यहूदी महासभा के सामने कहा:

135

इन मनुष्यों से दूर ही रहो! और उन से कुछ काम न रखो! क्योंकि यदि यह धर्म या काम मनुष्यों की ओर से हो तब तो मिट जाएगा। परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे; कहीं ऐसा न हो, कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो (प्रेरितों के काम 5:38-39)।

136

इस दृष्टिकोण से देखने के द्वारा, प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों की सुसमाचार की आशीषित सेवकाई प्रमाणित होते हुए इस तरह दिखाई देती है कि पवित्र आत्मा ने उनकी सेवकाई को सशक्त और सत्यापित किया।

137

इसी के साथ उनके कार्य के द्वारा दिए गए प्रमाण और परमेश्वर के द्वारा उनकी सुसमाचार की सेवकाई के ऊपर गुणात्मक आशीष के द्वारा, प्रेरितों के अधिकार को भी उनकी सेवकाई के साथ प्रगट होने वाले आश्चर्यकर्मों में देखा जा सकता है।

138

आश्चर्यकर्म

सम्पूर्ण बाइबल में आश्चर्यकर्मों का एक मुख्य कार्य यह प्रमाणित करना है कि परमेश्वर के सन्देशवाहक सत्य को बोलें और परमेश्वर प्रदत अधिकार का प्रयोग करें। निर्गमन की पुस्तक में, मूसा के कई आश्चर्यकर्मों को फिरौन के सामने यह प्रमाणित करने के लिए प्रदर्शित किए कि उसने सच्चे परमेश्वर के बारे में बोला था। पहले और दूसरे राजा में, एलिय्याह और एलीशा ने आश्चर्यकर्मों को प्रदर्शित किया जो यह पुष्टि करते हैं कि उनकी भविष्यद्वाणियाँ और शिक्षाऐं परमेश्वर की ओर से थीं। सुसमाचारों में, यीशु ने आश्चर्यकर्मों को यह प्रमाणित करने के लिए प्रगट किया कि वह मसीह था, परमेश्वर की ओर से नियुक्त सेवक और भविष्यद्वक्ता जिसे उसके लोगों को बचाने और उन पर राज्य करने के लिए भेजा गया था।

139

और कुछ इसी तरह से, प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों के द्वारा आश्चर्यकर्म यह प्रमाणित करते हैं कि उनकी मसीह के प्रति दी गई गवाही सत्य थी। प्रेरितों ने प्रेरितों के काम 5:16 में बीमार को चंगा किया। उन्होंने प्रेरितों के काम 14:8 में लंगड़े को चंगा किया। उन्होंने प्रेरितों के काम 9:40 में मृतक को जीवित किया। उन्होंने प्रेरितों का काम 13:11 में दुष्ट को परेशानी में डाला। प्रेरितों के काम 12:10 में वे बन्दीगृह से बच निकले। प्रेरितों के काम 27: 44 में वे टूटते हुए जहाज में भी बच गए, और प्रेरितों के काम 28:3 में जहरीले साँप के काटने से भी बच निकले। सच्चाई तो यह है, कि उनकी सामर्थ्य इतनी ज्यादा थी कि प्रेरितों के काम 5:15 के अनुसार, पतरस की परछाई जिसे भी छू जाती थी वह चंगा हो जाता था। और प्रेरितों के काम 19:11-12 के अनुसार, जिन कपड़ों को पौलुस छूता था उनसे दुष्टआत्मायें निकल जाती थीं और बीमार चंगे हो जाते थे। इस तरह के आश्चर्यकर्म केवल परमेश्वर की ओर से ही आ सकते थे, जो यह प्रमाणित करते हैं कि प्रेरित वास्तव में उसके अधिकारिक गवाह थे।

140

इसी लिए पौलुस ने अपने द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों को 2 कुरिन्थियों 12:12 में इस तरीके से विवरण दिया है:

141

प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों - और अद्भूत कामों - और सामर्थ्य के कामों से दिखाए गए (2 कुरिन्थियों 12:12)।

142

पवित्र आत्मा के द्वारा सशक्त किए जाने के द्वारा सामर्थ्य के काम एक प्रेरितों के चिन्ह थे, जो इस बात का प्रमाण था कि वह मसीह और उसके कार्य के लिए विश्वासयोग्य गवाही दे रहा था।

143

अब क्योंकि हमने प्रेरितों के कार्य, परमेश्वर की उनके द्वारा सुसमाचार विस्तार पर आशीष, और उनके आश्चर्यकर्मों को देख लिया है, हम अब उस प्रकाशन को देखने के लिए तैयार हैं जिसे उन्होंने उनके अधिकार के प्रमाण में प्राप्त किया।

144

प्रकाशन

लूका ने कई बार यह वर्णन किया है कि पवित्र आत्मा ने प्रेरितों का मार्गदर्शन करते हुए, सुसमाचार के सत्य की ओर अगुवाई दी, ताकि वे पूरी कलीसिया के लिए निर्णय लेते हुए, इसके संरचनात्मक तत्वों को आकार दे सकें जो कलीसिया को परिपक्वता की ओर अग्रसर करे। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 10 में, पतरस ने परमेश्वर की ओर से एक दर्शन को प्राप्त किया जिसमें उसे सिखाया गया कि अन्यजातियों को कलीसिया में यहूदी धर्म में परिवर्तित किए जाने की शर्तों के बिना पूरी तरह से लेने की आवश्यकता है। और प्रेरितों के काम अध्याय 16 में, पौलुस ने एक दर्शन को प्राप्त किया जिसमें उसे मकिदुनिया में सुसमाचार की घोषणा, करते हुए राज्य के सुसमाचार को विस्तृत तौर पर प्रसार करने के लिए कहा गया।

145

लूका के वास्तविक पाठक, और बाकी की आरम्भिक कलीसिया के लिए, प्रेरितों का अधिकारिक कार्य, सेवकाई में आशीष, सत्यापित आश्चर्यकर्म और प्रकाशन सभी उनके निर्विवाद अधिकार को निरूत्तर कर देने वाले साक्ष्य थे। और जैसा कि लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में वर्णन दिया है, कि आरम्भ की कलीसिया ने प्रेरितों की अधिकारिक गवाही और नेतृत्व के प्रति प्रतिक्रिया उनकी सारी शिक्षाओं और निर्णयों को स्वीकार और उनके अधीन होने के द्वारा किया। और इसी तरह से, आधुनिक विश्वासियों को चाहिए कि वे भी मसीह के इन अधिकारिक राजदूतों के प्रति, दोनों तरीकों से अर्थात् प्रेरितों के काम जैसी पुस्तकों में दी गई उनकी शिक्षाओं के सार और नए नियम में उनके अधिकारिक लेखों के प्रति अधीन हो जाये।

146

प्रेरितों की गवाही के अधिकारिक और अद्वितीय स्वभाव को ध्यान में रखते हुए, हम अब उन विविध तरीकों को देखने के लिए तैयार हैं जिनमें वे और उनका अनुसरण करने वाले इस संसार में मसीह के सुसमाचार की गवाही दे रहे थे।

147

विविधतायें

प्रेरितों और उनका अनुसरण करने वाले जिन्होंने मसीह की गवाही पूरे के पूरे प्रेरितों का काम की पुस्तक में दी के विविध तरीकों पर हमारी विवेचना को हम दो भागों में बाँटेंगे। सबसे पहले, हम मसीह की गवाही देने के लिए विभिन्न रणनीतियों पर ध्यान देंगे। दूसरा, हम कई तरह के विभिन्न ढाँचों का उल्लेख करेंगे जिसमें उन्होंने इस गवाही को दिया। आइए सबसे पहले विभिन्न रणनीतियों को देखें जो कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रयोग की गई हैं।

148

रणनीतियाँ

जबकि यहाँ पर अनगिनित तरीके हैं जिनसे हम प्रेरितों और उनके अनुयायियों द्वारा इस संसार को मसीह को प्रस्तुत करने की रणनीतियों के बारे में वर्णित कर सकते हैं, परन्तु यहाँ पर छः प्राथमिक दृष्टिकोणों को सोचना उपयोगी होगा। सबसे पहले, उन्होंने अक्सर इतिहास का उपयोग किया, विशेष करके जब जीवन, मृत्यु और यीशु मसीह के पुनरूत्थान के संदर्भ में कहने की बात आई जो कि सम्पूर्ण रोमी साम्राज्य में सूचित किए गए थे।

149

उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 26:26 में, पौलुस ने राजा अग्रिप्पा को यह शब्द कहे:

150

राजा भी जिस के सामने मैं निडर होकर बोल रहा हूँ, ये बातें जानता है, और मुझे प्रतीति है, कि इन बातों में से कोई उस से छिपी नहीं, क्योंकि यह घटना किसी कोने में नहीं हुई (प्रेरितों के काम 26:26)।

151

इस संदर्भ में, पौलुस की मुख्य बात यह थी कि वे मौलिक तथ्य जिसे उसने और कलीसिया ने घोषित किया था वे पूरे के पूरे प्राचीन संसार को मालूम थे। इस तरह के ऐतिहासिक घटनाओं का उपयोग करना एक सामान्य रणनीति थी जिसे प्रेरितों ने प्रयोग किया जब वे अविश्वासियों को गवाही दे रहे थे।

152

दूसरा, प्रेरितों ने लगातार पवित्र शास्त्र का उपयोग सुसमाचार के विस्तार की सहायता के लिए किया। जब यहूदी श्रोताओं को गवाही दी जा रही थी, तो प्रेरित अक्सर पुराने नियम का उपयोग करते थे। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 3:22 में, पतरस ने मूसा के शब्दों को यहूदियों के लिए यह प्रमाणित करने के लिए उपयोग किया कि यीशु ही लम्बे-समय से प्रतीक्षा किया जाने वाला मसीह था। और प्रेरितों के काम 23:6 में, पौलुस ने मृतकों के पुनरूत्थान के यहूदी मान्यता का उपयोग किया जो कि पुराने नियम के पवित्र शास्त्र से निकलता है।

153

तीसरा, जब अन्यजाति श्रोताओं को गवाही दी जा रही थी, तो प्रेरितों ने परमेश्वर के प्रकृति में दिए हुए प्रकाशन और उन सच्ची मान्यताओं का उपयोग किया जो कि मूर्तिपूजक विचारधारा में पाई जाती थी। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 17:24-27, पौलुस परमेश्वर और मनुष्य के इतिहास के लिए मूर्तिपूजकों के सामान्य दृष्टिकोणों का प्रयोग अथेने के लोगों को सुसमाचार की घोषणा के लिए आरम्भिक बिन्दु के रूप में किया। उसने वहाँ पर क्या कहा उसे सुनिए:

154

जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बाँधा है। कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पा जाएँ तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं (प्रेरितों के काम 17:24-27)।

155

जिस दृष्टिकोण को पौलुस ने यह प्रस्तुत किया है वो न केवल मसीही विश्वासियों और यहूदियों के द्वारा मान्य थे बरन् वे मूर्तिपूजकों को भी मान्य थे। सच्चाई तो यह है कि अथेने में अरियुपगुस पर भी यही संदेश दिया, तौभी उसने मूर्तिपूजक साहित्य की ओर संकेत किया। जो कुछ उसने प्रेरितों के काम की पुस्तक 17:28 में कहा उसे सुनिए:

156

क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते- फिरते, और स्थिर रहते हैं, जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, "कि हम तो उसी के वंश भी हैं" (प्रेरितों के काम 17:28)।

157

यहाँ पर पौलुस ने यूनानी काव्य साहित्य का उपयोग मसीहियत की गवाही देने के लिए उपयोग किया जब वह अथेने में मसीह के लिए गवाही दे रहा था।

158

चौथा, प्रेरितों ने जब वे मसीह को दूसरों के मध्य प्रस्तुत कर रहे थे तो अक्सर व्यक्तिगत् अनुभवों का उपयोग किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका ने कई बार इसका वर्णन किया है कि पौलुस ने इस तरीके का उपयोग किया। उदाहरण के लिए, पौलुस ने उसके नाटकीय मन परिवर्तन को जो कि दमिश्क के मार्ग में हुआ था को उपयोग किया, जिसे प्रेरितों के काम अध्याय 9 में वर्णित किया गया है। उसने प्रेरितों के काम 22 अध्याय में यरूशलेम में यहूदियों की भीड़ के आगे अपने अनुभव को स्मरण किया, और उसने इसका विवरण राजा अग्रिप्पा को प्रेरितों के काम अध्याय 26 में दिया।

159

पाँचवाँ, प्रेरितों ने कई चिन्ह और आश्चर्यकर्मों को जिस सत्य के सुसमाचार का वे प्रचार कर रहे थे को प्रमाणित करने के लिए किया। जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा, प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रेरितों के द्वारा प्रगट किए हुए आश्चर्यकर्मों से भरी पड़ी है। जब कभी भी आत्मा ने प्रेरितों को आश्चर्यकर्म करने के लिए सामर्थ्य दी, तो उसने ऐसा यीशु मसीह की गवाही देने में सहायता करने के लिए किया।

160

छठा, प्रेरितों ने यीशु के प्रति गवाही उनकी अटल विश्वासयोग्यता के द्वारा दी। उन्होंने निरन्तर लोगों का ध्यान मसीह से प्राप्त ध्यानाकर्षण के द्वारा खींचने में उपयोग किया, और उन्होंने उसका अनुसरण करने की बुलाहट को इन्कार कर दिया यहाँ तक कि जब वे सताए गए या फिर जब उन्हें धमकाया गया। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 14 में जब लुस्त्रा के लोगों ने पौलुस और बरनबास की पूजा करनी चाही, तो पौलुस ने जोर दिया कि वह तो केवल एक मनुष्य था, और उसने लोगों का ध्यान परमेश्वर की ओर लगाया। और प्रेरितों के काम अध्याय 4 में, जब यहूदी महासभा ने प्रेरितों को धमकाया और सुसमाचार प्रचार करने से रोकने के लिए दोषी ठहराया, तो प्रेरितों ने चुप रहने से मना कर दिया। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 5:28-29 में पढ़ते हैं:

161

क्या हम ने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? [महा याजक] ने कहा। तव पतरस और. और प्रेरितों ने उत्तर दिया, "कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।" (प्रेरितों के काम 5:28-29)।

162

प्रेरितों ने विभिन्न तरह की रणनीतियों का उपयोग किया जब उन्होंने सुसमाचार प्रचार का कार्य किया। और उनकी शिक्षाओं और उदाहरणों के द्वारा, उन्होंने आरम्भ की कलीसिया को भी ऐसा करने के लिए शिक्षित किया। लूका के द्वारा वर्णित यह चित्र प्रत्येक युग के मसीही विश्वासियों को उत्साहित करनी चाहिए ताकि वे उन सभी रणनीतियों की खोज कर लें जिन्हें परमेश्वर चाहता है कि वे उसका अनुसरण करें जब हम सुसमाचार के लिए उसकी गवाही देते हैं।

163

इन सभी विभिन्न रणनीतियों के अलावा प्रेरित मसीह के लिए गवाही देते थे, हमें उन विभिन्न ढाँचों पर ध्यान देना चाहिए जिनमें वे मसीह के बदले में गवाही देते थे।

164

ढाँचे

ऐसे कई तरीके हैं जिनमें हम विभिन्न ढाँचों को सारांशित कर सकते हैं जिनमें प्रेरितों ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में सुसमाचार के लिए गवाही दी। परन्तु हमारी अपनी आसानी के कारण, हम इन समयावधियों को चार मौलिक श्रेणियों में एकत्र कर देंगे। सबसे पहले, वहाँ पर सार्वजनिक भाषण थे। यहाँ पर हमारे पास वे घटनाएँ हैं जिसमें प्रेरितों ने एक बड़े समूह के लोगों को सार्वजनिक ढाँचे में रहकर भाषण दिया, चाहे यह सन्देश हो, या फिर मंडन भाषण हो, या फिर किसी अन्य तरह का व्यक्तव्य हो।

165

इस तरह के प्रस्तुतिकरण में, प्रेरितों ने बहुत ही ज्यादा सावधानी से श्रोताओं के अनुसार अपने शब्दों का चुनाव करके उन्हें भाषण दिया। जैसा कि हमने पहले ही इस अध्याय में देख लिया है, वे यहूदियों से एक तरीके से और अन्यजातियों से दूसरे तरीके से बोले।

166

दूसरा, प्रेरितों ने संवाद या वाद विवाद के संदर्भ में गवाही दी। इस तरह के ढाँचे में, लोगों को प्रतिवाद करने के लिए निमन्त्रण दिया जाता है, और प्रेरितों से यह आशा की जाती थी कि वे सुसमाचार का मंडन करें। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 19 में, पौलुस ने इफिसुस में तिरनुस नामक स्थान के सभाघर में वाद- विवाद किया, जहाँ पर व्यक्तव्य कला और नए विचारों को लोगों के आगे जाँचा जाता था।

167

तीसरा, प्रेरितों के काम में प्रेरितों और अन्य जिन्होंने उनका अनुसरण किया ने अक्सर पूरे घराने में गवाही दी। प्राचीन संसार में, घरानों में विशेष तौर पर माता पिता और उनके बच्चों से ज्यादा लोग सम्मिलित होते थे। वहाँ पर अक्सर सम्बन्धी, मित्र और उस घराने के सेवकगण होते थे। इस लिए, जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में घरानों के बारे में पढ़ते हैं, तो हमें यह कल्पना करनी चाहिए कि उनमें उनके सम्बन्धी भी होते थे जैसे बच्चे, दादा दादी, चाचा और चाची, और इसी के साथ काम करने वाले कर्मचारी और सेवकगण, और कई घरानों में तो गुलाम भी सम्मिलित थे। पूरे घराने के समूह मिलकर लगभग औसतन 15 से 20 लोगों को मिलाकर होता था। हम प्रेरितों के उदाहरणों को पाते हैं कि वे प्रेरितों के काम की पुस्तक में कई स्थानों पर घरानों को गवाही दे रहे थे, जैसा कि अध्याय 10 में, जहाँ पतरस ने कुरनेलियुस के घराने को गवाही दी; और अध्याय 16 में जहाँ पर पौलुस ने लुदिया और फिलिप्पी के बन्दीगृह के दरोगा को गवाही दी।

168

चौथा, प्रेरितों के काम में गवाही देने के तरीके में व्यक्तिगत् सुसमाचार प्रचार के उदाहरण भी हैं। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्याय 25 में, पौलुस ने राजा अग्रिप्पा से व्यक्तिगत् तौर पर बातचीत करते हुए अपने शब्दों को विशेष तौर पर अग्रिप्पा के ज्ञान और अनुभव से मिलाया।

169

संक्षेप में, प्रेरितों ने स्वयं को केवल एक निश्चित तरीके से ही या फिर एक निश्चित ढाँचे में ही गवाही देने तक सीमित नहीं रखा। जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक का सर्वेक्षण करते हैं, तो हम उन्हें प्रत्येक अवसर का लाभ उठाते हुए पाते हैं, जिसमें वे सुसमाचार का प्रचार इस तरीकों से कर रहे हैं जो कि प्रत्येक श्रोता के लिए उचित लगता हो। ऐसा करने के द्वारा, प्रेरितों ने हमारे लिए एक नमूने को प्रदान किया है, जो हमें सुसमाचार के उन तत्वों के ऊपर जोर देने के लिए शिक्षा देता है जिनके द्वारा हम अपने श्रोताओं के साथ ज्यादा शक्ति के साथ तर्क वितर्क करते हुए उन पर जोर दे सकते हैं, और उन विशिष्ट तरीके का पता लगा सकते हैं जो कि प्रत्येक अविश्वासी के जीवन के साथ सम्बन्धित होता है।

170

कलीसिया

पवित्र आत्मा और प्रेरितों के विषयों के ऊपर देख लेने के बाद, हम अब अपने प्रेरितों के काम के तीसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं: जो कि कलीसिया है जिसे कि प्रेरितों ने स्थापित किया।

171

हम कलीसिया के विषय की जानकारी दो तरीकों से लेंगे। पहला, हम कलीसिया की आवश्यकता को देखेंगे। और दूसरा, हम प्रेरितों के द्वारा निरन्तर कार्य चलता रहे के लिए की गई तैयारी को देखेंगे। आइए सबसे पहले हम कलीसिया की आवश्यकता को देखें।

172

आवश्यकता

मसीह ने उसकी कलीसिया को निर्मित करने के लिए प्रेरितों को अधिकृत किया। क्योंॽ प्रेरित जानते थे कि वे थोड़े से ही लोग हैं जो कि मसीह के सुसमाचार को पूरे संसार में स्वयं के बल पर नहीं ले जा सकते हैं; उन्हें प्रत्येक स्थान पर राज्य के सुसमाचार प्रचार की घोषणा के लिए गवाहों की सेना की आवश्यकता थी।

173

हम उन दो तथ्यों की ओर देखेंगे जिसने कलीसिया को प्रेरितों के मिशन को स्थापित करने के लिए आवश्यक बना दिया। पहला, हम प्रेरितों की भौतिक सीमाओं को देखेंगे, वे सच्चाई कि वे भौतिक तौर पर जिस कार्य को उन्हें करने के लिए दिया गया था को नहीं कर सकते थे। दूसरा, हम उनके लौकिक सीमाओं को देखेंगे, वे सच्चाई कि वे सामान्य मानवी जीवन को यापन करेंगे और भविष्य की पीढ़ियों के लिए गवाही देने के लिए असमर्थ होंगे। आइए प्रेरितों की भौतिक सीमाओं से आरम्भ करें।

174

भौतिक सीमायें

जैसा कि हमने पहले ही देख लिया है, कि प्रेरितों का कार्य मसीह की गवाही सुसमाचार की घोषणा के द्वारा देने के लिए था। परन्तु वे स्वयं से पूरे संसार के लिए "जीवित पत्रियाँ" बन कर नहीं दे सकते थे। इस समस्या के समाधान के लिए, प्रेरितों ने कलीसिया को प्रामाणिक गवाह होने का दायित्व सौंपा। जैसे जैसे लोग कलीसिया में प्रेरितों के सुसमाचार के द्वारा जोड़ दिये जाते थे, ये विश्वासी अपने आप में ही "जीवित पत्रियाँ" बन गए। उन्होंने सुसमाचार को अपने में यापन किया, परिणामस्वरूप अपने परिवारों और पड़ोसियों के लिए यीशु के गवाह बन गए। उनमें से कुछ तो यहाँ तक कि मिशनरी और सुसमाचार प्रचारक बन गए। इस तरह से, प्रेरितों ने प्रत्येक पीढ़ी में प्रामाणिक सुसमाचार प्रचार के लिए एक स्वयं-को-प्रदर्शित करता हुआ नमूना प्रदान किया, जिसमें अब कलीसिया स्वयं ही सबसे ज्यादा कार्य कर रही है। यह सुनिश्चित है, कि कलीसिया उसी अधिकार और प्रमाणित आश्चर्यकर्मों के द्वारा सुसमाचार का प्रचार करने के योग्य नहीं हुई जो कि प्रेरितों के प्रचार के साथ में प्रगट हुए। परन्तु फिर भी, पवित्र आत्मा कलीसिया के जीवन और वचन की प्रमाणिक गवाही के द्वारा कार्य करने से प्रसन्न हुआ था, और काफी सारे नए विश्वासी इस तरीके से इसमे आ जुड़े थे।

175

उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 11:19-21 को सुनिए, जो यह कहता है कि विश्वासी सताव के कारण बिखर गए:

176

[वे] फिरते फिरते फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुँचे; परन्तु उन में से कितने... अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु के सुसमचार की बातें सुनाने लगे। और प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे (प्रेरितों के काम 11:19-21)।

177

प्रेरितों की भौतिक सीमाओं की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हमें लौकिक सीमाओं के ऊपर ध्यान देना चाहिए जो कि उनके नश्वरता होने के द्वारा उत्पन्न हुई थी।

178

लौकिक सीमायें

प्रेरित इस बात से आश्वस्त थे कि यीशु वापस आएगा, परन्तु वे नहीं जानते थे कि कब। जिस समय राजा हेरोदेस ने प्रेरित याकूब को प्रेरितों के काम अध्याय 12 में मारा, तो यह स्पष्ट था कि कम से कम कुछ प्रेरित उस समय तक जीवित नहीं रहेंगे जब तक यीशु पुन: वापस नहीं आ जाता। इस लिए प्रेरितों ने कलीसिया को प्रत्यक्ष रूप से प्रेरिताई देखरेख में सुसमाचार प्रचार के लिए, परन्तु साथ ही साथ प्रेरितों की मृत्यु के बाद कलीसिया के निर्माण के कार्य के चलते रहने के लिए भी इसे प्रशिक्षित किया।

179

उदाहरण के लिए, पौलुस के इफिसियों के प्राचीनों को प्रेरितों के काम 20:25-28 में कहे हुए शब्दों को सुनिए:

180

और अब देखो, मैं जानता हूँ, कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुँह फिर न देखोगे... इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है (प्रेरितों के काम 20:25-28)।

181

पौलुस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि कलीसिया निरन्तर सुसमाचार प्रचार के लिए प्रामाणिक तरीके से मसीह के ऊपर निर्भर रहेगी और विश्वासियों को परिपक्वता तक लेकर आएगी। इस लिए, उसने यह सुनिश्चित किया कि इसके अगुवों को उनकी मृत्यु के बाद निरन्तर सेवकाई के लिए तैयार रहना चाहिए। प्रेरितों की भौतिक और लौकिक सीमाओं के कारण, कलीसिया प्रेरितों की छोटी-अवधि और लम्बी-अवधि की रणनीतियों के लिए परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए केन्द्र थी।

182

अब क्योंकि हमने प्रामाणिक गवाही के लिए कलीसिया की आवश्यकता को देख लिया है, इस लिए हमें अब प्रेरितों द्वारा कलीसिया की तैयारी की ओर मुड़ना चाहिए।

183

तैयारी

प्रेरितों ने कलीसिया को परमेश्वर के राज्य के विस्तार के मिशन के लिए कई तरीके तैयार किये। परन्तु समय की कमी के कारण हम स्वयं को तीन कारणों तक सीमित रखेंगे: पहला, हम इस सच्चाई के ऊपर देखेंगे कि प्रेरितों ने कलीसिया को निर्देश दिया कि वह प्रेरितों की शिक्षा के प्रति विश्वासयोग्य रहे, जिसमें उनकी यीशु के प्रति विश्वासयोग्य गवाही सम्मिलित थी। दूसरा, हम प्रेरितों के द्वारा कलीसिया में अधिकारियों के पद को प्रदान करने के बारे में पता लगाएंगे, जैसे प्राचीन और डीकन। और तीसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे प्रेरितों ने कलीसिया को कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार किया जो की शीघ्र आने वाली थी। हम सबसे पहले शिक्षा की ओर मुड़ेंगे जिसे प्रेरितों ने कलीसिया को दिया।

184

शिक्षायें

इफिसियों अध्याय 2 में, प्रेरित पौलुस ने कलीसिया को एक भवन कह कर विवरण दिया है, जो कि मसीह जो सिरे का पत्थर है, और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव के ऊपर निर्मित है। इफिसियों 2:19-20 में उसके शब्दों को सुनिए:

185

इसलिए तुम अब...पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए हो और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप है, बनाए गए हो (इफिसियों 2:19-20)।

186

यहाँ पर ध्यान दीजिए कि पौलुस के मन में केवल मात्र यही बात नहीं है कि प्रेरित ही कलीसिया के आरम्भिक अगुवे थे, परन्तु उनकी शिक्षायें भी कलीसिया के लिए नींव के समान थी, जो कि कलीसिया के विश्वास का आधार थी।

187

इफिसियों 3:4-6 में, पौलुस नींव की भूमिका को अपनी शिक्षा के द्वारा इस तरह से वर्णन करता है:

188

जिस से तुम पढ़कर जान सकते हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ। जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है (इफिसियों 3:4-6)।

189

इसी लिए लूका प्रेरितों के काम की पुस्तक में इन तथ्यों के ऊपर बड़ी सावधानी से ज्यादा जोर देता है कि कलीसिया ने स्वयं को प्रेरितों की शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया था। जैसा कि प्रेरितों के काम 2:42 में वर्णित किया हुआ है:

190

वे [अर्थात् विश्वासी] प्रेरितों से शिक्षा पाने में लौलीन रहे (प्रेरितों के काम 2:42)।

191

लूका चाहता था कि उसके पाठक यह जाने कि मसीह के प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए, उसके राज्य के विस्तार को फैलाने की हमारी कोशिश के लिए परमेश्वर की आशीष के लिए, कलीसिया को न केवल यीशु जो कि सिरे का पत्थर है के ऊपर निर्मित होना चाहिए, परन्तु आरम्भ की कलीसिया के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव के ऊपर भी निर्भर होना चाहिए। प्रेरितों ने आधिकारिक और विश्वसनीय तौर पर यीशु की शिक्षा और कार्य को उन तक पहुँचाया था। इस लिए, प्रत्येक युग के विश्वासी को चाहिए कि वे प्रेरितों की शिक्षा को संभाले, घोषित करे और इसी के द्वारा जीवन यापन करे।

192

यह यहाँ तक कि मसीह की आज की कलीसिया के लिए भी सत्य है। सबसे स्पष्ट तरीका यह है कि यह हमारे लिए आज भी सत्य है कि नया नियम स्वयं मौलिक तौर पर प्रेरितों के द्वारा लिखा गया। और वे पुस्तकें जो कि प्रेरितों के द्वारा नहीं लिखी गई हैं, जैसे कि प्रेरितों के काम की पुस्तक, ने प्रेरितीय सहमति को प्राप्त किया है। जैसा कि मसीह की आज की कलीसिया है, हम अपने जीवनों को नए नियम के लेखों के ऊपर निर्मित करते हैं जो कि प्रेरितों की शिक्षाओं का सार है।

193

यह देख लेने के बाद की प्रेरितों ने कलीसिया को उनकी शिक्षाओं के प्रति विश्वासयोग्य रहने का निर्देश देने के द्वारा तैयार किया, अब हम इस बात की ओर ध्यान करने के लिए तैयार हैं कि उन्होंने कैसे कलीसिया को तैयार करने के लिए अधिकारियों को नेतृत्व देने और कलीसिया की सेवा करने के लिए तैयार किया जब कलीसिया नए स्थानों और नई पीढ़ियों में विस्तार करती चली गई।

194

अधिकारीगण

जैसा कि हमने देखा है, कि प्रेरितों ने भौतिक और लौकिक सीमाओं का सामना किया जिसने उन्हें उनके अपने मिशन को पूरा करने के लिए बाधा पहुँचाई। और इस समस्या के समाधान का आंशिक हिस्सा कलीसिया में अतिरिक्त अधिकारियों की नियुक्ति करना था।

195

यहाँ हमें रूक कर यह कहना चाहिए कि विभिन्न मसीह परम्पराओं ने यह समझा है कि आरम्भ की कलीसिया में विभिन्न तरह का शासन और अधिकारीगण थे। कलीसिया की कुछ शाखायें इन तीन पदों के होने को स्वीकार करती हैं: बिशप, प्राचीन और डीकन। अन्य केवल दो ही पदों को स्वीकार करते हैं: प्राचीन और डीकन। फिर भी कुछ अन्य हैं जो कि प्रेरितों, मिशनरी, प्रचारकों और अन्यों को सम्मिलित करते हैं।

196

कलीसिया में उचित शासन का प्रश्न हमारे इस अध्याय के लक्ष्य से परे है, परन्तु हम सामान्य बात के ऊपर जोर देना चाहते हैं कि प्रेरितों ने कलीसिया में अतिरिक्त अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के लिए नियुक्त किया जो कि परमेश्वर के मिशन को आगे की ओर ले कर जाएंगे।

197

सच्चाई तो यह है, कि प्रेरितों ने अतिरिक्त अधिकारियों को बहुत जल्द ही नियुक्त करना आरम्भ कर दिया था क्योंकि उन्होंने लगभग एकदम यह पहचान लिया था कि वे स्वयं से उन सेवकाइयों को अभी संभाल नहीं सकते थे जो कि यरूशलेम की स्थानीय कलीसिया के साथ सम्बन्धित थीं। हम इसे प्रेरितों के काम अध्याय 6 में बहुत ही स्पष्टता से देखते हैं, जहाँ पर प्रेरितों ने डीकन के पद की स्थापना यह पुष्टि करने के लिए की कि कलीसिया उसके सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने के योग्य हो सके। इस घटना में, प्रेरितों ने कलीसिया को निर्देश दिया कि वे अपने में से कुछ जिम्मेदार लोगों को प्रतिदिन का भोजन वितरण करने के लिए चुन ले।

198

सुनिए किस तरह से प्रेरितों ने प्रेरितों का काम 6:3-6 में इस समस्या का निपटारा किया:

199

[प्रेरितों ने यह कहा], "इसलिये हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरूषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।"... [कलीसिया ने], इन लोगों को चुन लिया। और इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्हों ने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे (प्रेरितों का काम 6:3-6)।

200

प्रेरितों ने प्राचीनों को नियुक्त किया, जिन्हें अक्सर पास्टर कहा जाता है, ताकि वे देखभाल करें और कलीसिया की विभिन्न स्थानीय कलीसियाओं को नेतृत्व प्रदान करें। उदाहरण के लिए, पौलुस की मिशनरी यात्रा के बीच में, प्रेरितों ने विशेष तौर पर नए विश्वासियों को कलीसियाओं में एकत्र किया, और अगुवों की नियुक्ति की जो कि जब वे इन्हें छोड दें तो कलीसिया की देखभाल का दायित्व ले सकें।

201

हम प्रेरितों के काम 14:23 में इसका एक उदाहरण देखते हैं, जहाँ पर लूका ने इस तरह से वर्णन किया है:

202

और पौलुस और बरनबास ने हर एक कलीसिया में उन के लिये प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके, उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्हों ने विश्वास किया था (प्रेरितों के काम 14:23)।

203

सच्चाई तो यह है, कि प्रेरित कलीसिया के लिए प्राचीनों को तैयार करने के लिए इतनी ज्यादा इच्छा रखते थे कि उन्होंने अपने साथ प्राचीनों को इसकी अगुवाई करने के लिए उत्साहित किया यहाँ तक जब प्रेरित अस्तित्व में ही थे। इसका सबसे प्रमुख उदाहरण प्रेरितों के काम की यरूशलेम की महासभा में मिलता है जिसे की अन्यजातियों से सम्बन्धित प्रश्न के लिए आयोजित किया गया था – यह प्रश्न की कैसे अन्यजातियों को कलीसिया में पूरी रीति से लेना है। महासभा को प्रेरितों और प्राचीनों दोनों के द्वारा संचालित किया गया था। प्रेरितों का काम अध्याय 15 में, जहाँ एक घटना को वर्णित किया गया है, प्रेरितों और प्राचीनों दोनों का उल्लेख कम से कम पाँच बार कलीसिया के अगुवों के रूप में इकट्ठा किया गया है।

204

सुनिए प्रेरितों का काम 15:1-2 अध्याय कैसे आरम्भ होता है:

205

फिर कितने लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे: "कि यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते।" जब पौलुस और बरनबास का उन से बहुत झगड़ा और वाद-विवाद हुआ तो यह ठहराया गया, कि पौलुस और बरनबास, और हम में से कितने और व्यक्ति इस बात के विषय में यरूशलेम को प्रेरितों और प्राचीनों के पास जाएँ (प्रेरितों का काम 15:1-2)।

206

पौलुस और अन्यों को प्रेरितों और प्राचीनों से परामर्श लेने के लिए भेजा गया। हम ऐसे ही वाक्यांशों को इसी अध्याय की इन आयातों 4, 6, 22 और 23 में पाते हैं।

207

पूरे प्रेरितों के काम की पुस्तक में, प्रेरितों ने इन अधिकारिगणों को कलीसिया का काम करने की बुलाहट दी ताकि वे परमेश्वर के प्रतिज्ञात् मसीह के राज्य के मिशन को आगे ले कर चलें। हम इसे प्रेरितों के काम अध्याय 20 में इफिसियों के प्राचीनों को दिए गए पौलुस के कथन में देखते हैं। हम इसे याकूब जैसे प्राचीनों की मुख्य भूमिका में देखते हैं, जो कि ऐसा जान पड़ता है कि यरूशलेम की कलीसिया की अगुवाई प्रेरितों के काम अध्याय 15 और 21 में कर रहा था।

208

सुनिए उस तरीके को जिसमें पौलुस ने तीतुस 1:5 में इन अधिकारियों की नियुक्ति के बारे में लिखा है:

209

मैं तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही हुई बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों को नियुक्त करे (तीतुस 1:5)।

210

पौलुस ने नौजवान पास्टर को निर्देश दिया कि वह जो कुछ पौलुस बिना पूरा किए हुए छोड़ कर गया था उसे वह पूरा करे। ऐसा कहने का अर्थ यह है, कि प्राचीन तीतुस को वे सब कार्य पूरे करने थे जिन्हें प्रेरित पौलुस ने आरम्भ किया था; उसे निरन्तर परमेश्वर के राज्य की सुसमाचार की प्रेरितीय मिशन को जारी रखना था।

211

पौलुस और अन्य प्रेरितों ने इन अधिकारियों की नियुक्ति इस लिए की थी ताकि वे उनसे सेवकाई के कार्य को ले लें। परमेश्वर ने कभी भी यह नहीं ठाना कि प्रेरित ही सब कुछ स्वयं करें। उसने यही ठाना कि प्रेरित उसकी कलीसिया को स्थापित करें। परन्तु उसने यह भी चाहा कि वे अन्यों को प्रशिक्षित करें जो कि प्रेरितों से कलीसिया में नेतृत्व को ले लें, ऐसे अधिकारी जो कि प्रेरितों की नींव पर कलीसिया को निरन्तर निर्मित करते हुए, उन समयों और क्षेत्रों में परमेश्वर के राज्य का विस्तार करें जहाँ पर प्रेरित कभी भी नहीं पहुँच सकते हैं।

212

अभी तक हमने यह देखा कि प्रेरितों ने कलीसिया को यीशु की शिक्षाओं और कार्य के बारे में सिखाया और मसीह के मिशन को पूरा करने के लिए अतिरिक्त अधिकारियों को प्रशिक्षित किया। इस स्थान पर, अब हम उस तरीके के बारे में बोलने के लिए तैयार हैं जिसमें प्रेरितों ने कलीसिया को कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार किया जो कि शीघ्र आने वाली थी जब कलीसिया आगे की ओर बढ़ती थी।

213

कठिनाइयाँ

लूका ने प्रेरितों के काम को कठिनाई, खतरे और उत्पीड़न से भरा हुआ था के रूप में वर्णन किया है। उन्हें अक्सर पीटा जाता और गिरफ्तार कर लिया जाता था। प्रेरित याकूब को राजा हेरोदेस ने मार डाला था। और प्रेरित जानते थे कि जो कुछ उनके स्वयं के जीवन में सत्य था वह अन्य विश्वासियों के जीवन में भी सत्य था।

214

एक बहुत ही रोचक प्रकरण में, पौलुस को लुस्त्रा नामक शहर में क्रोधित अविश्वसियों के द्वारा पत्थरवाह किया गया और मरा हुआ समझ कर छोड़ दिया गया। परन्तु अगले ही दिन, वह निकट के दिरबे नामक शहर में बच कर भाग गया। परन्तु शीघ्र ही, वह लुस्त्रा और अन्य शहरों में वापस आया और विश्वासियों को उत्साहित किया।

215

यह पौलुस के जीवन को मारने की कोशिश के संदर्भ में था कि लूका ने प्रेरितों के काम 14:21-22 में इन शब्दों को वर्णित किया है:

216

[पौलुस और बरनबास] लुस्त्रा और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए। और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे, "कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा" (प्रेरितों के काम 14:21-22)।

217

प्रेरित चाहते थे कि कलीसिया यह समझ ले कि वह सताव और कठिनाइयों का सामना करेगी। कुछ को यहाँ तक कि उनके विश्वास के कारण मार डाला जाएगा। परन्तु परमेश्वर के राज्य का लक्ष्य इससे ज्यादा मूल्यवान था। और इसी लिए, कलीसिया को चाहिए कि वह मसीह के प्रति अटल विश्वास में बनी रहे।

218

जिस तरह से प्रेरितों ने कलीसिया को कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार किया इसको पौलुस के द्वारा इफिसियों के प्राचीनों को दिए हुए उसके भाषण में भी देखा जा सकता है। प्रेरितों के काम अध्याय 20 में, पौलुस ने उनसे कहा कि हो सकता है कि वह उन्हें पुन: न देखे। उसने उसने कहा कि वह यरूशलेम जा रहा था, जहाँ पर हो सकता है कि उसे कैद कर लिया जाए और हो सकता है कि उसे मार डाला जाए। अपने जीवन के प्रति उसके इस गंभीर दृष्टिकोण के संदर्भ में, पौलुस ने इफिसियो की कलीसिया को उनकी अपनी कठिनाइयों का सामना करने के लिए चेतावनी और उत्साह से भरे हुए उपदेश दिए।

219

प्रेरितों के काम 20:28-31 में, उसने इफिसियों के प्राचीनों से इन शब्दों में बोला:

220

इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो; जिस से पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है। मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुण्ड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे। इसलिये जागते रहो; और स्मरण करो; कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा बहाकर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा (प्रेरितों के काम 20:28-31)।

221

बहुत सारे प्रेरितों ने इसी तरह की बातों को कलीसियाओं को लिखे गए अपने पत्रों में लिखी हैं। पतरस, यूहन्ना और पौलुस प्रत्येक ने कलीसिया को विश्वास के विरूद्ध आने वाले शत्रुओं से सावधान रहने, पवित्र शास्त्र और उनकी शिक्षाओं पर निर्भर रहने, और मसीह के प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए लिखा है।

222

इन सबमें, प्रेरितों की चाहत यही थी कि वे कलीसिया को निरूत्साहित न करें। इसकी बजाए, वे कलीसियाओं को मसीह में भरोसा करने के लिए तैयार करें कि वे कठिनाइयों का सामना करें, पवित्र आत्मा के अनुग्रहों और वरदानों के ऊपर निर्भर रहें, और निरन्तर परमेश्वर के मिशन को पूरा करने के लिए इसके पीछे चलते रहें।

223

कलीसिया को प्रेरितों की गवाही और शिक्षा के ऊपर निर्मित कर देने के द्वारा, कलीसिया में अधिकारियों की स्थापना करने के द्वारा, कलीसिया को कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार करने के द्वारा, और अन्य कई तरीकों से, प्रेरितों ने यह पुष्टि की कि कलीसिया प्रत्येक स्थान और युग में परमेश्वर के राज्य के मिशन का विस्तार करने के लिए सक्षम हो जाए।

224

उपसंहार

इस अध्याय में हमने तीन प्रमुख विषयों की खोज की जो कि प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में गूँथे हुए हैं। हमने पवित्र आत्मा की गतिविधियों और वरदान देने के ऊपर ध्यान दिया है। हमने मसीह के विशिष्ट आधिकारिक गवाहों के रूप में प्रेरितों के महत्व पर चर्चा की है। और हमने यह देखा कि कैसे प्रेरितों ने उनके लिए कलीसिया की स्थापना के निर्धारित कार्य को पूरा किया।

225

प्रेरितों के काम की पुस्तक इतिहास और धर्मविज्ञान का उल्लेखनीय कार्य है। जब लूका ने थियुफिलुस और आरम्भ की कलीसिया को इसे लिखा, तो उसने पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में पृथ्वी के छोर तक उनकी गवाही के द्वारा परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए सुसमाचार प्रचार के महत्व पर प्रकाश डाला है। जब हम इन अध्यायों को हमारे आज के जीवनों में लागू करते हैं, तो हमें स्वयं को परमेश्वर के राज्य के लिए समर्पित, उस दिन की ओर देखते हुए करना चाहिए कि मसीह एक दिन अनन्त राज्य की पूर्णता के लिए पुन: वापस आएगा।

226